



समाज जागरण का शंखनाद अवध प्रहरी

वर्ष : 12

अंक : 02

16-31 जनवरी 2026

नेताजी

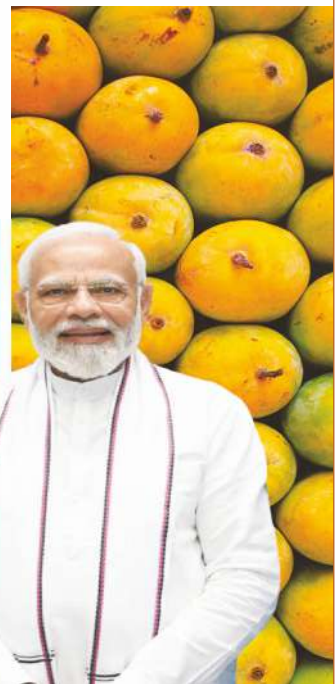
निर्भीक भारत की
अमर आत्मा





प्रति वर्ष 400 लाख टन फल एवं सब्जियों का उत्पादन

गन्ना, चीनी, खाद्यान्न, आम, दुग्ध, आलू,
शीरा उत्पादन में अग्रणी



करके दिखाए जे
डबल इंजन
सरकार है वो

▶ UPGovtOfficial f CMOUttarpradesh ✕ CMOfficeUP



सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

अवध प्रहरी

पाक्षिक

वर्ष : 12

अंक : 02

RNI. No. UPHIN/2015/65982



सम्पादक

शिवबली विश्वकर्मा

सम्पादक मण्डल

डॉ. अनूप आनन्द

सुरेश सिंह

विवेक रॉय

मृत्युंजय दीक्षित

कार्यालय

संस्कृति भवन

राजेन्द्र नगर, लखनऊ-226004

ई-मेल

avadhprahari@gmail.com

मुद्रक एवं प्रकाशक शम्भू दयाल पुरवार द्वारा भारतीय संस्कृति पुनरुत्थान समिति के लिए नूतन आफसेट, संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर लखनऊ से मुद्रित एवं संस्कृति भवन, राजेन्द्रनगर लखनऊ से प्रकाशित।



Scan & Subscribe

अवध प्रहरी प्रकाशन सेवा न्यास

खाता संख्या : 02510210002360

आई एफएससी : UCBA0000251

यूको बैंक, शाखा नाका, लखनऊ

अनुक्रम



नेताजी : निर्भीक भारत की अमर आत्मा

05



अन्तर्मुखी साधना और राष्ट्रजीवन की...

08



स्वावलम्बन व संवेदना का संगम महामानव...

09



जनजातीय उत्थान के प्रतीक स्वामी प्रणवानंद

10



हिन्दुत्व से ही होगा विश्व कल्याण : ...

11



हिन्दुत्व की परिभाषा

12



केजीएमयू का लव जिहादी रमीज गिरफ्तार,...

13



कला, संस्कार और राष्ट्रचेतना के साधक...

15



भगवान की खोज

16

सुभाषित

तथाप्येको रामः सकलमवधीद्राक्षसकुलं ।
क्रियासिद्धिः सत्त्वे भवति महतां नोपकरणे ॥

आपदाओं के विरुद्ध श्रीराम ने सभी राक्षसों का संहार किया। व्यक्ति की सफलता अपने क्षमताओं पर निर्भर करती है।

सम्पर्क- 0522-4106333, 90 90 30 40 96

पत्रिका प्राप्ति के लिए सहयोग राशि

वार्षिक सदस्यता ₹ 200
12 वर्षीय सदस्यता ₹ 1000
आजीवन सदस्यता ₹ 2000

लेखक के विचारों से सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद का न्याय क्षेत्र लखनऊ होगा।



एकजुट रहें हिन्दू

संघ प्रमुख मोहन भागवत बार-बार यह स्पष्ट कर चुके हैं कि हिन्दू समाज की शक्ति केवल धार्मिक पहचान में नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना और सामाजिक एकजुटता में निहित है। उनका मार्गदर्शन यह सिखाता है कि समाज को जागरूक और संगठित रहना चाहिये ताकि हमारी संस्कृति, परम्परा और भविष्य सुरक्षित रह सके।

भारत की सभ्यता और संस्कृति विश्व में अनोखी है। यह केवल धार्मिक पहचान नहीं, बल्कि जीवन जीने का मार्गदर्शन, सामाजिक नियम, नैतिक मूल्य और सौहार्द की परम्परा है। इतिहास गवाह है कि जब समाज में भेद, असहमति और असंगठन रहा, तब बाहरी ताकतों ने इसे कमजोर किया और विभाजन पैदा किया। यही कारण है कि आज हिन्दू समाज का एकजुट होना न केवल जरूरी, बल्कि अति आवश्यक है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संदेश और प्रयास इसी दिशा में है—समाज को जागरूक करना, विभाजन के बजाय एकता पर जोर देना और संस्कृति की रक्षा करना। हमारे पुरखों ने भी यही सिखाया कि बुराई और अन्याय के खिलाफ लड़ाई तब ही सफल होती है जब समाज संगठित और एकजुट हो। इतिहास के पन्नों में यह बार-बार सामने आया है कि विभाजन और आन्तरिक झगड़े समाज को कमजोर करते हैं, और बाहरी ताकतें इसका लाभ उठाती हैं इसलिये, हिन्दू समाज की वास्तविक शक्ति उसके एकजुट होने, समझदारी दिखाने और अपने अधिकारों की रक्षा करने की क्षमता में निहित है।

वर्तमान समय में हमारी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक चुनौतियाँ अलग-अलग रूप में सामने हैं। वैश्विक स्तर पर हमारी संस्कृति, परम्पराएँ और स्वायत्तता कई बार दबाव में हैं। देश के भीतर भी सामाजिक असमानता, सांस्कृतिक अवमूल्यन और बाहरी प्रवृत्तियाँ हिन्दू समाज को प्रभावित कर रही हैं। ऐसे समय में एकजुटता ही हमारी सबसे बड़ी ताकत है। जब समाज विभाजित रहेगा, तब हमारी आवाज दब जायेगी और हमारे अधिकार कमजोर पड़ेंगे लेकिन यदि हम जागरूक और संगठित होंगे, तो न केवल हम अपने समाज की रक्षा कर सकेंगे, बल्कि देश और समाज में सकारात्मक बदलाव भी ला सकेंगे।

संघ प्रमुख का सन्देश हमें सिखाता है कि एकजुट समाज अपने भीतर सहयोग, प्रेम, समझदारी और अनुशासन पैदा करता है, और इसी के माध्यम से समाज और देश की सुरक्षा होती है। संघ यह भी स्पष्ट करता है कि धर्म, भाषा या जाति के आधार पर भेदभाव समाप्त करना जरूरी है। समाज में जब सभी वर्ग और समुदाय समान दृष्टि और समान उद्देश्य के साथ आगे बढ़ते हैं, तभी वास्तविक शक्ति का अनुभव होता है। इतिहास ने यह भी दिखाया है कि जब हिन्दू समाज अपने मूल मूल्यों और सांस्कृतिक धरोहर से जुड़ा रहता है, तो वह न केवल खुद को मजबूत बनाता है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को भी संस्कृति, ज्ञान और नैतिकता की राह दिखाता है। हमारी संस्कृति में न केवल धर्म का ज्ञान है, बल्कि कला, विज्ञान, शिक्षा और सामाजिक अनुशासन का समृद्ध अनुभव भी निहित है। जब समाज एकजुट होता है, तो यह सभी क्षेत्रों में विकास का मार्ग प्रशस्त करता है तथा बुराई और अन्याय के खिलाफ खड़ा होता है।

आज का हिन्दू समाज यदि अपने मूल्यों और परम्पराओं से जुड़े रहकर एकजुट होता है, तो वह न केवल अपनी पहचान बचा सकता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के लिये सकारात्मक बदलाव ला सकता है। संघ का मार्गदर्शन इस दिशा में लगातार प्रेरित करता है। यह हमें याद दिलाता है कि समाज की शक्ति उसकी संगठनात्मक क्षमता और जागरूकता में निहित है। एकजुट समाज अपने अधिकारों के लिए खड़ा होता है, बुराई के खिलाफ लड़ता है और संस्कृति के संरक्षण में अग्रणी भूमिका निभाता है। हिन्दू एकजुटता का सन्देश केवल राजनीतिक या धार्मिक नहीं है। यह सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक सुरक्षा और राष्ट्रीय जिम्मेदारी का विषय है। जब हम समाज में एकता, सहयोग और जागरूकता बढ़ाते हैं, तभी हम आने वाली पीढ़ियों के लिए सशक्त और समर्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं। यह समाज न केवल अपने भीतर सन्तुलन बनाये रखने के साथ बाहरी दबाव और चुनौतियों का सामना भी आत्मविश्वास और शक्ति के साथ करेगा।।



नेताजी : निर्भीक भारत की अमर आत्मा

भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल सत्ता परिवर्तन की कथा नहीं, वह आत्मसम्मान, अस्मिता और मनुष्यता की मुक्ति का महासंग्राम था। वह एक सभ्यता की आत्मा की पुनर्प्राप्ति थी। इस पुनर्प्राप्ति के पथ पर जिन व्यक्तित्वों ने अपनी पूरी चेतना, चरित्र और जीवन होम कर दिया, उनमें सुभाष चन्द्र बोस का स्थान अद्वितीय है।

इस महासंग्राम में सुभाष चन्द्र बोस उस अग्नि के समान थे, जिसने निष्क्रियता को भस्म कर साहस और संघर्ष की लपट जलायी। उनका नाम आज भी भारत की चेतना में वैसे ही जीवित है जैसे रणभूमि में उठता हुआ युद्धघोष। वे एक साथ सन्त भी थे और सेनानी भी, साधक भी थे और संगठनकर्ता भी, राजनीतिज्ञ भी थे और रणवीर भी। उनके भीतर साधना की शान्ति थी और संघर्ष की चिंगारी। यही द्वंद्व उन्हें साधारण से असाधारण बनाता है।

जब एक बालक ने साम्राज्य से प्रश्न करना सीखा

23 जनवरी 1897 को ओड़िशा के कटक नगर में जन्मा वह बालक केवल एक परिवार की सन्तान नहीं था, वह आने वाले भारत की चेतना था। पिता जानकीनाथ बोस अंग्रेजी शासन द्वारा सम्मानित, 'रायबहादुर' की उपाधि से विभूषित, नगरपालिका और बंगाल विधानसभा से जुड़े प्रतिष्ठित वकील थे। माता प्रभावती देवी संस्कार, संयम और आत्मिक दृढ़ता से गढ़ी हुई एक भारतीय नारी थीं। उस घर में सुविधा थी, प्रतिष्ठा थी, सुरक्षा थी पर एक चीज का अभाव था: गुलामी से समझौता।

इसी घर में पलते हुए सुभाष ने बहुत छोटी आयु में अन्याय को पहचानना सीख लिया। जब स्कूल में उन्होंने देखा कि अंग्रेज बच्चों को आगे की पंक्तियों में और भारतीय बच्चों को पीछे बैठाया जाता है, तो यह केवल एक व्यवस्था नहीं थी, यह उनके भीतर उठी एक ज्वाला थी। उस बाल मन में एक प्रश्न जल उठा कि 'हम अलग क्यों?' यही वह क्षण था जब एक छात्र नहीं, एक संघर्षशील आत्मा जन्म ले रही थी। यही वह बिन्दु था जहाँ सुभाष चन्द्र बोस के भीतर साम्राज्य के विरुद्ध एक आजीवन विद्रोह आकार लेने लगा।

आईसीएस का त्याग, आत्मा की आहट

पिता चाहते थे कि सुभाष ब्रिटिश साम्राज्य की सर्वोच्च सेवा आईसीएस की सीढ़ियाँ चढ़ें। वह पद सत्ता का शिखर था, सम्मान का सिंहासन था, सुविधा की सुनिश्चित सीढ़ी थी। पर सुभाष की आत्मा उस रात सो नहीं सकी। एक पूरी रात वे स्वयं से संघर्ष करते रहे कि क्या आत्मा की आजादी, शासन की सुविधा से सस्ती हो सकती है? क्या पराधीनता की प्रतिष्ठा, स्वाधीनता की पीड़ा से बड़ी हो सकती है? उन्होंने परीक्षा दी और 1920 में चौथा स्थान प्राप्त कर लिया। साम्राज्य ने उन्हें बुलाया, व्यवस्था ने उन्हें आमंत्रित किया, अवसर ने उन्हें आलोकित किया। पर भीतर महर्षि दयानन्द की निर्भीकता और अरविन्द की आत्मज्वाला बोल रही थी कि गुलामी की सेवा, चाहे वह कितनी भी सुशोभित क्यों न हो, गुलामी ही होती है।

22 अप्रैल 1921 को उन्होंने भारत सचिव ई.एस. मॉन्टेग्यू को त्यागपत्र भेज दिया। वह एक कागज नहीं था, वह एक साम्राज्य को दिया गया नैतिक नकार था।

वह पद नहीं छोड़ रहे थे, वे पराधीनता को पराजित कर रहे थे। उस साहस को सबसे बड़ा संबल माँ प्रभावती के शब्दों से मिला कि 'हमें अपने बेटे के इस निर्णय पर गर्व है।' जून 1921 में जब सुभाष स्वदेश लौटे, तो वे केवल ट्राइपास की डिग्री लेकर नहीं आये थे बल्कि वे स्वाधीन संकल्प, स्वतंत्र स्वाभिमान और समर्पित साधना लेकर लौटे थे। उसी दिन एक अधिकारी नहीं, एक आन्दोलन भारत लौटा।



विवेकानन्द से अरविन्द तक : विद्या से विद्रोह की यात्रा

रेवेनशा स्कूल के प्राचार्य बेनीमाधव दास ने सुभाष को केवल पाठ्य-पुस्तकों का विद्यार्थी नहीं बनाया, उन्होंने उसे प्रश्न करने वाला नागरिक बनाया। उनके सान्निध्य में सुभाष ने जाना कि शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी पाना नहीं, बल्कि आत्मबोध और राष्ट्रबोध पाना होता है। यही वह भूमि थी, जहाँ विवेकानन्द का विचार अंकुरित हुआ। किशोर सुभाष ने विवेकानन्द के ग्रंथों में भारत की आत्मा को पहचाना। आत्मविश्वास, आत्मबल और आत्मत्याग से गढ़ी हुई एक जाग्रत सभ्यता से उनका साक्षात्कार हुआ। विवेकानन्द ने उन्हें सिखाया कि गुलामी केवल राजनीतिक स्थिति नहीं होती, वह मानसिक पतन होती है। इसी कारण सुभाष के लिये अंग्रेजी शासन के साथ किसी भी प्रकार का सामंजस्य आत्मसमर्पण के समान था। अरविन्द घोष के विचारों ने इस बोध को और प्रखर किया कि स्वतंत्रता नैतिक प्रार्थना से नहीं, बल्कि संगठित संकल्प और साहसी संघर्ष से प्राप्त होती है।

जब वे प्रेसीडेंसी कॉलेज पहुँचे, तो यह



वैचारिक संस्कार उनके व्यवहार में उतर चुका था। अंग्रेज अध्यापकों द्वारा भारतीय छात्रों के साथ किये जा रहे पक्षपात और अपमान को वे सहन नहीं कर सके। उन्होंने छात्रों को संगठित किया, अन्याय के विरुद्ध आवाज उठायी और प्रशासन को चुनौती दी। परिणामस्वरूप उन्हें कॉलेज से निष्कासित कर दिया गया। पर यह दण्ड उनके लिये पराजय नहीं था यह ब्रिटिश सत्ता द्वारा यह स्वीकार करना था कि यह युवक साधारण नहीं है। यहीं पहली बार सत्ता और सुभाष आमने-सामने आये। एक ओर साम्राज्य था, दूसरी ओर चरित्र।

सुभाष सेना में जाना चाहते थे, क्योंकि उन्हें लगा कि स्वतंत्रता का अन्तिम तर्क शक्ति होता है। लेकिन आँखों की कमजोरी के कारण उन्हें अयोग्य घोषित कर दिया गया। शरीर भले ही वदीं न पहन सका, पर मन सैनिक ही रहा। यही कारण था कि आगे चलकर उन्होंने संगठित सेना खड़ी की, अनुशासन रचा और राष्ट्र को एक सशस्त्र विकल्प दिया।

इस प्रकार विवेकानन्द की चेतना और अरविन्द की क्रान्ति-दृष्टि से सुभाष का व्यक्तित्व गढ़ा गया, जहाँ शिक्षा सेवा नहीं, संघर्ष बन गयी और विद्या विद्रोह।



सेवा से संघर्ष तक, मानवता का राष्ट्रवाद

भारत लौटते ही सुभाष ने स्वयं को जनजीवन के बीच उतार दिया। हैजा और बाढ़ से उजड़े मोहल्लों में वे प्रशासन नहीं, उपस्थिति बनकर पहुँचे। जहाँ राज्य की मशीनरी थक जाती थी, वहाँ उनका साहस काम करता था। पीड़ितों की देखभाल, बीमारों की सेवा और टूटे घरों की मरम्मत उनके लिये राष्ट्रसेवा का पहला अभ्यास थी। हैदर खाँ के परिवार की सहायता का प्रसंग इसीलिये उल्लेखनीय है, क्योंकि उसमें न तो धर्म था, न विरोध, केवल मनुष्यता थी। सुभाष के लिये भारत किसी समुदाय का नहीं, एक साझा विवेक का नाम था।

रवीन्द्रनाथ ठाकुर के परामर्श पर वे महात्मा गांधी से मिले। 20 जुलाई 1921 को मुम्बई के मणिभवन में हुई यह भेंट उन्हें राष्ट्रीय राजनीति से जोड़ने वाली पहली सीढ़ी बनी। गांधी ने उन्हें कोलकाता जाकर देशबंधु चित्तरंजन दास के साथ कार्य करने का सुझाव दिया। यही वह क्षण था, जब आदर्श से संगठन की ओर उनकी यात्रा आरम्भ हुई।

देशबंधु के नेतृत्व में बंगाल असहयोग आंदोलन की धुरी बना। चौरी-चौरा के बाद जब गांधी ने आन्दोलन स्थगित किया, तो दासबाबू ने स्वराज पार्टी की स्थापना की और कोलकाता के मेयर बने। सुभाष को नगर निगम का मुख्य कार्यकारी अधिकारी नियुक्त किया गया। वहाँ उन्होंने प्रशासनिक संरचना को पुनर्गठित किया, औपनिवेशिक प्रतीकों को हटाया गया, भारतीय पहचान को स्थापित किया गया और स्वतंत्रता सेनानियों के परिवारों को रोजगार दिया गया। यह सत्ता का नहीं, स्वाभिमान का पुनर्संयोजन था।

गांधी से उनका दृष्टिकोण भिन्न था, पर लक्ष्य समान। सुभाष मानते थे कि स्वतंत्रता केवल नैतिक आग्रह से नहीं आती, उसे

राजनीतिक दबाव और संगठित शक्ति की आवश्यकता होती है। इसके बावजूद उन्होंने गांधी को 'राष्ट्रपिता' कहा, क्योंकि वे संघर्ष में भी नेतृत्व की गरिमा पहचानते थे।

जवाहरलाल नेहरू के साथ उन्होंने 'इण्डिपेंडेंस लीग' का गठन किया। 1927 में साइमन कमिशन के विरोध में उन्होंने कोलकाता की सड़कों को संगठित प्रतिवाद का मंच बनाया। इसके बाद नेहरू रिपोर्ट के निर्माण में वे सदस्य बने और 1928 के कांग्रेस अधिवेशन में खाकी वर्दी में मोतीलाल नेहरू को दी गयी उनकी सैन्य सलामी उस समय के राजनीतिक माहौल को स्पष्ट कर देती थी, यह आन्दोलन अब केवल याचना नहीं, संकल्प बन चुका था।

डोमिनियन स्टेट्स के प्रश्न पर गांधी से मतभेद हुआ। सुभाष और नेहरू पूर्ण स्वराज के पक्ष में थे। अन्ततः यह सहमति बनी कि यदि एक वर्ष में अंग्रेजों ने माँग नहीं मानी तो स्वतंत्रता की घोषणा की जायेगी। जब ब्रिटिश सरकार टाल-मटोल पर अड़ी रही, तो 26 जनवरी 1930 को भारत ने पहली बार स्वतंत्रता दिवस घोषित किया।

1931 में भगत सिंह की फाँसी सुभाष के लिये निर्णायक क्षण बनी। वे मानते थे कि इस मुद्दे पर राजनीतिक समझौते की कोई नैतिक वैधता नहीं है। इसी असन्तोष ने उन्हें कांग्रेस की नीति से दूर और एक अधिक आक्रामक राजनीतिक दृष्टि की ओर मोड़ा।

देशबंधु की परम्परा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने कांग्रेस के भीतर सक्रिय विरोध की भूमिका अपनायी। स्वराज्य पार्टी की विरासत, नेहरू रिपोर्ट का प्रतिरोध और आगे चलकर फॉरवर्ड ब्लॉक की स्थापना उसी वैचारिक क्रम की कड़ियाँ थीं।

1938 में कांग्रेस अध्यक्ष बनने पर उन्होंने

दो धाराएँ, एक ध्येय

6 जुलाई 1944 को आजाद हिन्द रेडियो से नेताजी ने एक ऐतिहासिक भाषण दिया। उसमें उन्होंने महात्मा गांधी को 'राष्ट्रपिता' कहा। यह केवल सम्बोधन नहीं था, यह उस व्यक्ति द्वारा दी गयी स्वीकृति थी जो हथियार उठाये खड़ा था, पर नैतिक नेतृत्व को पहचानता था, उत्तर में गांधी ने सुभाष को 'नेताजी' कहा। दोनों की राहें अलग थीं। एक सत्याग्रह की, दूसरी संघर्ष की पर लक्ष्य एक ही था : भारत की मुक्ति। यही नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की सबसे बड़ी विरासत है कि संघर्ष में भी सम्मान और विरोध में भी राष्ट्रबोध।

राष्ट्रीय योजना आयोग गठित किया। इससे स्पष्ट हो गया कि सुभाष केवल सत्ता परिवर्तन नहीं, संरचना परिवर्तन की सोच लेकर आगे बढ़ रहे थे। स्वतंत्र भारत उनके लिये एक संगठित, औद्योगिक और आत्मनिर्भर राष्ट्र का स्वप्न था और वही स्वप्न आगे चलकर उनके पूरे संघर्ष का आधार बना।

कारावास से कूटनीति तक

ग्यारह बार जेल जाना संयोग नहीं होता, वह साम्राज्य का स्वीकार किया हुआ भय होता है। हर गिरफ्तारी प्रमाण थी कि ब्रिटिश सत्ता सुभाष को केवल एक नेता नहीं, एक उभरता हुआ विकल्प मानने लगी थी। माण्डले जेल में तपेदिक ने उनके शरीर को तोड़ा, अल्मोड़ा जेल में क्षय ने उन्हें झुकाया, पर हर कारावास ने उनके संकल्प को और कठोर कर दिया।

ब्रिटिश सरकार उन्हें मरने नहीं देना चाहती थी, क्योंकि जीवित सुभाष खतरनाक थे, पर शहीद सुभाष पूरे राष्ट्र को जगा सकता था। माण्डले जेल को वे दण्ड नहीं, धरोहर मानते थे। उन्होंने कहा था कि 'यह आजादी चाहने वालों की पवित्र भूमि है।' जहाँ तिलक और लाला लाजपत राय जैसे सेनानी कैद रहे हों, वहाँ कारावास भी तपस्या बन जाता है।

1933 से 1936 तक सुभाष यूरोप में रहे। बीमारी के बीच भी उन्होंने राजनीतिक संवाद नहीं छोड़ा। जर्मनी पहुँचकर उन्होंने 'आजाद हिन्द रेडियो' के माध्यम से भारत की आत्मा से संवाद किया। हिन्दी, बंगाली और तमिल में गूँजती वह आवाज़ ब्रिटिश साम्राज्य के लिये सबसे असहज प्रसारण बन गयी।

आजाद हिन्द सरकार : भारत की पहली स्वतंत्र सत्ता

इसी दौरान वे मुसोलिनी से मिले, आयरलैण्ड के नेता डी वलेरा से मित्रता बनी। ऑस्ट्रिया में कमला नेहरू की मृत्यु पर वे स्वयं जवाहरलाल के पास पहुँचे। राजनीति के मतभेद वहाँ मनुष्यता में विलीन हो गये।

विठ्ठलभाई पटेल के साथ उनका संवाद 'पटेल-बोस विश्लेषण' के रूप में प्रसिद्ध हुआ, जिसमें गांधी की रणनीति पर खुला विमर्श किया गया। यह विरोध नहीं था, यह स्वतंत्रता की दिशा को लेकर वैचारिक टकराव था।

और फिर आया इतिहास का वह अविश्वसनीय अध्याय... समुद्र में उतरकर जर्मन पनडुब्बी से जापानी पनडुब्बी तक पहुँचना। यह किसी रोमांचक उपन्यास की घटना नहीं थी, यह एक राष्ट्र की मुक्ति के लिये की गयी सबसे जोखिमभरी कूटनीतिक यात्रा थी। उसी यात्रा ने सुभाष को पूर्वी एशिया पहुँचा दिया, जहाँ अब संघर्ष का अन्तिम चरण आरम्भ होने वाला था।

नेताजी का वाङ्मय व भारत का दायित्व

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस को केवल युद्धभूमि या राजनीतिक मंच पर सीमित करके नहीं समझा जा सकता। उनकी वास्तविक उपस्थिति उनके शब्दों में भी उतनी ही तीव्र है। आज उनकी आत्मकथा, The Indian Struggle, असंख्य पत्र, भाषण और रेडियो प्रसारण उपलब्ध हैं, पर उन्हें उद्धरणों की तरह नहीं, सन्दर्भों की तरह पढ़ना आवश्यक है। नेताजी किसी एक विचारधारा के प्रतिनिधि नहीं थे। वे उस भारत की अभिव्यक्ति थे जो जब विवश होता है तो झुकता नहीं, बल्कि लड़ता है।

अपने अत्यन्त व्यस्त और संघर्षपूर्ण जीवन के बीच भी लेखन उनके लिये आत्मप्रकाश का माध्यम बना रहा। उनकी आत्मकथा 'An Indian Pilgrim' अधूरी रह गयी, किन्तु उसकी मूल पाण्डुलिपि में अंकित योजना यह स्पष्ट करती है कि वे उसे पूर्ण करना चाहते थे। इसी तरह उनकी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'The Indian Struggle' लन्दन से प्रकाशित हुई और स्वतंत्रता आन्दोलन पर अन्तरराष्ट्रीय विमर्श का महत्वपूर्ण स्रोत बनी। इन कृतियों के अतिरिक्त उनके पत्र और भाषण उनके बहुआयामी व्यक्तित्व का जीवन्त दस्तावेज हैं, जहाँ राजनीतिक रणनीति, वैचारिक स्पष्टता और निजी संवेदनशीलता एक साथ दिखायी देती है।

नेताजी के इस व्यापक साहित्य को संरक्षित करने का ऐतिहासिक दायित्व डॉ. शिशिर कुमार बोस ने निभाया। 1961 में उन्होंने नेताजी रिसर्च

21 अक्टूबर 1943 का दिन भारतीय इतिहास में केवल एक तारीख नहीं, एक उद्घोष था। सिंगापुर में उस दिन आजाद हिन्द सरकार की स्थापना हुई। भारत की पहली स्वतंत्र सरकार। इसके राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और युद्धमंत्री तीनों दायित्व एक ही व्यक्ति के कंधों पर थे, सुभाष चन्द्र बोस। इस सरकार को नौ देशों ने मान्यता दी। यह केवल प्रतीकात्मक नहीं था। यह अन्तरराष्ट्रीय राजनीति में भारत की स्वतंत्र सत्ता की पहली औपचारिक स्वीकृति थी। नेताजी ने अपने अधीन आजाद हिन्द फौज को पुनर्गठित किया, जिसमें अंग्रेजों द्वारा बन्दी बनाये गये भारतीय सैनिकों को स्वाधीन सेनानी बनाया गया। पहली बार भारतीय नारी को भी युद्धभूमि में समान स्थान मिला, झांसी की रानी रेजिमेन्ट के रूप में। नेताजी का आह्वान 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' कोई नारा नहीं था। वह इतिहास के साथ किया गया एक करार था, जिस पर हजारों भारतीयों ने अपने जीवन की आहुति दी। जापानी सेना के सहयोग से आजाद हिन्द फौज ने अंग्रेजों से अण्डमान और निकोबार द्वीप मुक्त कराये। नेताजी ने उन्हें शहीद द्वीप और स्वराज द्वीप नाम दिया, यह स्पष्ट संकेत था कि यह संघर्ष केवल सैन्य नहीं, प्रतीकात्मक भी था। इसके बाद फौज इम्फाल और कोहिमा तक पहुँची। यद्यपि युद्ध में पीछे हटना पड़ा, पर जब सेना थककर गिर रही थी, नेताजी अपनी टुकड़ियों के साथ सैकड़ों मील पैदल चले, नेतृत्व का वह दृश्य आज भी इतिहास में अद्वितीय है।



ब्यूरो की स्थापना कर उनके सम्पूर्ण वाङ्मय के संकलन और प्रकाशन का कार्य आरम्भ किया। प्रारम्भ में दस खण्डों की योजना बनी, जो आगे चलकर बारह खण्डों तक विस्तृत हुई। 1980 से यह कार्य क्रमशः बांग्ला, अंग्रेजी और हिन्दी में प्रकाशित होता गया और अन्तिम खण्ड 2011 में सामने आया। इस महाकाय सम्पादकीय प्रयास में सुगत बोस की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही, विशेषतः अन्तिम खण्डों के सम्पादन में।

इस समग्र वाङ्मय का पहला खण्ड आत्मकथा और पत्रों को समेटता है, दूसरा खण्ड 'The Indian Struggle' को प्रस्तुत करता है, और शेष खण्डों में उनके भाषण, टिप्पणियाँ और अन्य लेखन क्रमबद्ध रूप में उपलब्ध हैं। इसके माध्यम से नेताजी का चिन्तन आज किसी कल्पना में नहीं, बल्कि प्रमाणिक पाठ में सुरक्षित है।

आज भारत के लिये यह केवल एक ऐतिहासिक संग्रह नहीं, बल्कि एक बौद्धिक दायित्व है कि नेताजी को अपूर्ण उद्धरणों या राजनीतिक सुविधा से नहीं, बल्कि उनके समग्र विचार, संघर्ष और सन्दर्भों में समझा जाये। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है।

रहस्यमयी विदाई, अमर विरासत

18 अगस्त 1945 की वह तिथि केवल एक दुर्घटना नहीं, बल्कि इतिहास की सबसे गूढ़ खामोशी है। उस दिन एक देह ओझल हुई पर

एक चेतना अमर हो गयी।

नेताजी सुभाष चन्द्र बोस कहीं समाप्त नहीं हुए, वे भारत की आत्मा में समा गये। कुछ जीवन ऐसे होते हैं जिन्हें मृत्यु छू नहीं सकती, क्योंकि वे किसी शरीर में नहीं, किसी राष्ट्र के स्वप्न में बसते हैं।

नेताजी हमें यह सिखा गये कि राष्ट्रसेवा कोई अवसर नहीं, वह तपस्या है। राजनीति कोई पद नहीं, वह प्रतिज्ञा है और स्वतंत्रता कोई सुविधा नहीं, वह पीढ़ियों का उत्तरदायित्व है। उनका जीवन भय से नहीं, भविष्य से संचालित था। उन्होंने पराधीनता को स्वीकार नहीं किया, उन्होंने उससे टकराने का साहस चुना।

आज, जब हम उनका नाम लेते हैं, तो यह केवल स्मरण नहीं होता, यह आत्मपरीक्षा होती है। क्या हम उस भारत के योग्य हैं, जिसका स्वप्न उन्होंने अपने लहू से लिखा था? क्या हमारी पीढ़ी भी उतनी ही निडर है, जितनी वह पीढ़ी थी जिसने नेताजी के 'दिल्ली चलो' पर अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया?

नेताजी इतिहास की किसी पुस्तक में बन्द नहीं हैं। वे हर उस युवा की धड़कन में हैं जो अन्याय के सामने सिर नहीं झुकाता। वे हर उस नागरिक की चेतना में हैं जो स्वतंत्रता को केवल अधिकार नहीं, कर्तव्य मानता है। वे गये नहीं, वे गूँजते हैं। वे प्रेरित करते हैं और वे सदा रहेंगे भारत की निर्भीक आत्मा, भारत की अमर अग्नि बनकर। ❖

अन्तर्मुखी साधना और राष्ट्रजीवन की आत्मिक शक्ति गुप्त नवरात्रि

भारत की सनातन परम्परा केवल उत्सवधर्मी नहीं, अपितु साधना-प्रधान रही है। हमारी संस्कृति में पर्व और साधना, दोनों का स्पष्ट और सन्तुलित स्थान है। जहाँ चैत्र और शारदीय नवरात्रि सामाजिक जागरण, सांस्कृतिक एकता और सार्वजनिक उपासना का माध्यम बनती हैं, वहीं माघ और आषाढ़ मास की नवरात्रियाँ- जिन्हें गुप्त नवरात्रि कहा गया है- भारतीय जीवन-दृष्टि के उस पक्ष का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो अन्तर्मुखता, आत्मसंयम और मौन साधना पर आधारित है।

भारतीय परम्परा में यह स्वीकार किया गया है कि सभी साधनाएँ सार्वजनिक नहीं होतीं। कुछ साधनाएँ समाज के लिये होती हैं और कुछ साधक के भीतर घटित होती हैं। गुप्त नवरात्रि इसी अन्तर्मुख साधना की परम्परा का प्रतीक है।

शक्ति का सूक्ष्म और तत्वात्मक स्वरूप गुप्त नवरात्रि

शास्त्रीय दृष्टि से नवरात्रि शक्ति-तत्त्व की उपासना का काल है। मार्कण्डेय पुराण के देवी माहात्म्य में शक्ति को केवल युद्ध या चमत्कार की अधिष्ठात्री नहीं, बल्कि समस्त सृष्टि में व्याप्त चेतना के रूप में देखा गया है। वहाँ कहा गया है -

या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

(देवी माहात्म्य, अध्याय 5)

यह मंत्र स्पष्ट करता है कि शक्ति बाह्य नहीं, प्रत्येक प्राणी के अन्तःकरण में स्थित है। गुप्त नवरात्रि की साधना इसी आन्तरिक शक्ति के जागरण की प्रक्रिया है। इस काल में देवी के प्रकट, सौम्य या लोकदर्शनीय रूपों की अपेक्षा उनके सूक्ष्म, तत्वात्मक और साधनात्मक स्वरूपों की आराधना की जाती है।

गोपनीयता-शास्त्रीय मर्यादा का आधार

गुप्त नवरात्रि की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उसकी गोपनीयता है। यह गोपनीयता किसी रहस्यवाद का परिणाम नहीं, बल्कि शास्त्रीय अनुशासन से उत्पन्न परम्परा है। कुलार्णव तंत्र में साधना की मर्यादा पर स्पष्ट निर्देश मिलता है-

गोपनीयं गोपनीयं गोपनीयं प्रयत्नतः।

न दातव्यं न दातव्यं न दातव्यं कदाचन॥

(कुलार्णव तंत्र, अध्याय 11)

अर्थात् जो साधना जितनी सूक्ष्म है,



उसे उतनी ही गोपनीयता और संयम की आवश्यकता होती है। सार्वजनिक प्रदर्शन साधना को अहंकार से जोड़ देता है, जबकि भारतीय साधना-दृष्टि में अहंकार को साधना का सबसे बड़ा विघ्न माना गया है। इसी कारण गुप्त नवरात्रि को उत्सवधर्मी परम्परा से अलग रखा गया।

साधक की पात्रता और आत्मसंयम

गुप्त नवरात्रि किसी चमत्कार या त्वरित फल की साधना नहीं है। यह दीर्घकालिक आत्म-परिष्कार और अनुशासन का मार्ग है इसलिये शास्त्रों में इसकी पात्रता को श्रद्धा और संयम से जोड़ा गया है। भगवद्गीता में कहा गया है -

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।

(भगवद्गीता, 4.39)

यह श्लोक बताता है कि ज्ञान और शान्ति वही प्राप्त करता है, जो श्रद्धा और इन्द्रिय-संयम के साथ जीवन जीता है। गुप्त नवरात्रि की साधना भी इसी सिद्धान्त पर आधारित है। भारतीय दृष्टि में गृहस्थ और साधक का भेद बाह्य नहीं, बल्कि आन्तरिक अनुशासन का होता है। अतः गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी गुप्त नवरात्रि की साधना सम्भव है।

अन्तर्मुख साधना - उपनिषदिक दृष्टि

गुप्त नवरात्रि का मूल स्वभाव अन्तर्मुख है। इसका दार्शनिक आधार कठ उपनिषद में मिलता है, जहाँ कहा गया है -

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूः

तस्मात् पराङ्पश्यति नान्तरात्मन्।

(कठ उपनिषद 2.1.1)

उपनिषद स्पष्ट करते हैं कि सामान्य चेतना बाहर की ओर जाती है, जबकि आत्मिक साधना भीतर की ओर लौटने की प्रक्रिया है। गुप्त नवरात्रि इसी अन्तर्मुख यात्रा का काल है।

व्यक्ति से राष्ट्र तक - साधना का सामाजिक अर्थ

भारतीय चिन्तन में व्यक्ति की साधना को समाज और राष्ट्र से अलग नहीं किया गया है। गुप्त नवरात्रि के माध्यम से विकसित आत्मसंयम, मानसिक स्थिरता और नैतिक दृढ़ता ही वह आधार है, जिस पर सशक्त समाज और संगठित राष्ट्र का निर्माण सम्भव है। जब व्यक्ति अपने भीतर के भय और लोभ पर विजय प्राप्त करता है, तभी वह सामाजिक दायित्वों का निर्वहन निस्वार्थ भाव से कर पाता है। इस दृष्टि से गुप्त नवरात्रि केवल व्यक्तिगत साधना नहीं, बल्कि राष्ट्रजीवन की आत्मिक शक्ति का पोषण है।

योग और मानसिक अनुशासन

गुप्त नवरात्रि की साधना भारतीय योग-दृष्टि से भी गहरायी से जुड़ी है। पतंजलि योगसूत्र में कहा गया है - योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः।

(योगसूत्र 1.2)

संयमित आहार, नियमित दिनचर्या और मानसिक नियंत्रण से चित्त की वृत्तियाँ सन्तुलित होती हैं। यही सन्तुलन धैर्य, विवेक और दीर्घकालिक कार्यक्षमता का आधार बनता है। यह साधना भोग का निषेध नहीं, बल्कि भोग पर विवेकपूर्ण नियंत्रण का मार्ग है। गुप्त नवरात्रि भारतीय संस्कृति की उस अन्तर्धारा का प्रतिनिधित्व करती है, जहाँ शक्ति का अर्थ बाह्य प्रदर्शन नहीं, बल्कि आत्मिक अनुशासन, मौन और साधना है। यह नवरात्रि स्मरण कराती है कि सशक्त राष्ट्र का निर्माण केवल बाह्य साधनों से नहीं, बल्कि अन्तःकरण की दृढ़ता से होता है। इसी कारण गुप्त नवरात्रि का मार्ग गूढ़ है, शान्त है और उन्हीं के लिये है, जो स्वयं को गढ़ने का साहस रखते हैं। ❖

स्वावलम्बन व संवेदना का संगम महामानव रज्जू भैया

प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह, जिन्हें दुनिया आदर से 'रज्जू भैया' कहती है, का जीवन इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि सच्चा बड़प्पन पद या प्रतिष्ठा में नहीं, बल्कि स्वभाव की सरलता में निहित होता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक जैसे सर्वोच्च और प्रभावशाली पद पर आसीन होने के बावजूद, रज्जू भैया का जीवन किसी तपस्वी से कम नहीं था। वे 'सादा जीवन, उच्च विचार' की सूक्ति का जीवन्त विग्रह थे। उनके जीवन में स्वावलम्बन केवल एक शब्द नहीं, बल्कि एक व्रत था। संघ प्रमुख बनने के बाद भी अपनी दिनचर्या में उन्होंने किसी सेवक की सहायता लेना स्वीकार नहीं किया। प्रवास के दौरान वे जिस भी कार्यकर्ता के घर रुकते, सूर्योदय से पूर्व ही उठकर अपने वस्त्र स्वयं धो लेते थे। जब कार्यकर्ता संकोचवश उनसे सेवा का आग्रह करते, तो रज्जू भैया अपनी चिर-परिचित मुस्कान के साथ कहते, "पद दायित्व बदलता है, स्वभाव नहीं, अपने निजी कार्यों के लिये दूसरों पर निर्भर होना एक स्वस्थ व्यक्ति को शोभा नहीं देता।" यह छोटी सी बात कार्यकर्ताओं के लिये जीवन भर का पाठ बन जाती थी।

शिक्षक नहीं अभिभावक थे

रज्जू भैया के व्यक्तित्व का सबसे संवेदनशील पहलू एक 'अभिभावक शिक्षक' के रूप में उभरता है। इलाहाबाद विश्वविद्यालय में अध्यापन के दौरान वे केवल भौतिकी के सूत्र नहीं समझाते थे, बल्कि अपने छात्रों के जीवन की कठिनाइयों को भी सुलझाते थे। वे एक ऐसे 'गुप्त दानी' थे, जिनका बायां हाथ भी नहीं जानता था कि दाहिने हाथ ने क्या दान दिया है। आर्थिक रूप से कमजोर न जाने कितने ही मेधावी छात्रों की फीस उन्होंने अपनी जेब से भरी, लेकिन इस शर्त के साथ कि उस छात्र को कभी पता न चले कि मदद किसने की है। वे छात्र के आत्मसम्मान को कभी ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे। यह उनकी संवेदनशीलता की पराकाष्ठा थी। जब उनके शिष्य डॉ. मुरली मनोहर जोशी देश के केन्द्रीय मंत्री बने और एक सार्वजनिक मंच पर उन्होंने प्रोटोकॉल तोड़कर रज्जू भैया के चरण स्पर्श किये, तो रज्जू भैया ने उन्हें गले लगाकर यही सन्देश दिया कि 'सत्ता और पद अस्थायी हैं, लेकिन ज्ञान और गुरु-शिष्य का सम्बन्ध शाश्वत है।'

सरल व्यक्तित्व के धनी

रज्जू भैया की सरलता का एक और अद्भुत उदाहरण उनकी यात्राओं में देखने को मिलता था। वे हमेशा सामान्य जन की तरह रेल के साधारण डिब्बों में यात्रा करना पसन्द करते थे। स्टेशन पर जब स्वयंसेवक उनका सामान उठाने के लिये लपकते, तो वे अपना छोटा सा सूटकेस कसकर पकड़ लेते और हँसते हुए कहते, 'अपना बोझ मैं स्वयं उठा सकता हूँ, जिस दिन

राष्ट्र सर्वोपरि

विज्ञान और राष्ट्रप्रेम के द्वंद्व में रज्जू भैया ने सदैव राष्ट्र को चुना। उनकी वैज्ञानिक प्रतिभा का लोहा नोबेल पुरस्कार विजेता सर सी.वी. रमन तक मानते थे। जब रज्जू भैया की कुशाग्र बुद्धि से प्रभावित होकर सर रमन ने उन्हें अपने साथ बेंगलुरु चलकर शोध करने का स्वर्णिम अवसर दिया, तो यह किसी भी युवा वैज्ञानिक के लिये परम सौभाग्य की बात थी। किन्तु, रज्जू भैया ने विनम्रतापूर्वक उस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा कि उनका जीवन उनके विश्वविद्यालय के छात्रों और राष्ट्र निर्माण के कार्य के लिये समर्पित है। उन्होंने व्यक्तिगत यश और वैज्ञानिक कीर्ति के स्थान पर मातृभूमि की सेवा के कठिन मार्ग को चुना। यह त्याग दर्शाता है कि उनके लिये विज्ञान का उद्देश्य केवल खोज करना नहीं, बल्कि उस ज्ञान का उपयोग समाज के उत्थान के लिये करना था।

न उठा पाऊँ, समझ लेना रज्जू अब बूढ़ा हो गया है।' उनकी यह विनोदप्रियता और सहजता उन्हें कार्यकर्ताओं के हृदय का सम्राट बनाती थी।

परम्परा और वैज्ञानिक दृष्टिकोण

वे अंधानुकरण के घोर विरोधी थे और हर परम्परा को तर्क की कसौटी पर कसते थे। उनका मानना था कि परम्परा का सम्मान आवश्यक है, लेकिन यदि वह समय के साथ



वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर खरी न उतरे, तो उसमें सुधार करने का साहस भी हममें होना चाहिये।

व्यक्ति नहीं विचार थे

रज्जू भैया का सम्पूर्ण जीवन एक ऐसी किताब की तरह है, जिसके हर पन्ने पर त्याग, तपस्या और तार्किकता की स्याही से राष्ट्रभक्ति की गाथा लिखी गयी है। उन्होंने दिखाया कि कैसे एक व्यक्ति विज्ञान की ऊँचाइयों को छूते हुए भी जमीन से जुड़ा रह सकता है। उनकी धवल मुस्कान, खादी के वस्त्र और स्नेहपूर्ण वाणी आज भी उन अनगिनत लोगों की स्मृतियों में जीवित है, जिनका जीवन उनके स्पर्श मात्र से बदल गया। रज्जू भैया केवल एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक विचार थे- एक ऐसा विचार जो हमें निरन्तर याद दिलाता रहेगा कि जीवन की सार्थकता स्वयं के लिये जीने में नहीं, बल्कि तिल-तिल कर समाज के लिये जलने में है।

ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य सेवा

आज के युग में, जब शिक्षा का बाजारीकरण हो रहा है और विज्ञान का उपयोग विनाश के लिये हो रहा है, रज्जू भैया का जीवन हमें याद दिलाता है कि ज्ञान का अन्तिम लक्ष्य सेवा है और जीवन की सार्थकता राष्ट्र के लिये जीने में है। उनकी यह विरासत आने वाली पीढ़ियों के लिये सदैव एक प्रकाश स्तम्भ का कार्य करती रहेगी। 14 जुलाई 2003 को जब वे पंचतत्व में विलीन हुए, तो देश ने केवल एक संघ प्रमुख को नहीं खोया, बल्कि एक महान वैज्ञानिक, एक आदर्श शिक्षक और एक तपस्वी समाज-सेवी को खो दिया। ❖

जनजातीय उत्थान के प्रतीक स्वामी प्रणवानंद

भारतीय सन्यास परम्परा को यदि केवल आत्ममोक्ष की व्यक्तिगत साधना तक सीमित कर दिया जाये, तो यह उसकी ऐतिहासिक और सामाजिक भूमिका के साथ अन्याय होगा। भारत के सन्तों और सन्यासियों ने युगों युगों तक न केवल आत्मिक उन्नति का मार्ग दिखाया, बल्कि समाज के सबसे उपेक्षित, वंचित और हाशिये पर खड़े समुदायों को सम्मान, सुरक्षा और दिशा प्रदान करने का कार्य भी किया है। इसी जीवन्त परम्परा के एक महत्वपूर्ण प्रतिनिधि थे स्वामी प्रणवानन्द जी, जिनका सम्पूर्ण जीवन विशेष रूप से भारत के जनजातीय समाज के उत्थान, सांस्कृतिक पुनर्जागरण के लिये समर्पित रहा।

जन्म और बाल्यावस्था

स्वामी प्रणवानन्द जी का जन्म 29 जनवरी 1896 को अविभाजित बंगाल के बाजितपुर गाँव में हुआ, जो वर्तमान में बांग्लादेश के फरीदपुर जिले में स्थित है। उनका बचपन एक साधारण ग्रामीण परिवेश में बीता। बाल्यावस्था से ही उनमें एक अलग प्रकार की संवेदनशीलता दिखायी देने लगी थी। यही संवेदना आगे चलकर उनके पूरे जीवन का आधार बनी।

शिक्षा प्राप्त करने के दौरान उनका मन सांसारिक उपलब्धियों की ओर आकर्षित नहीं हुआ। युवा अवस्था में ही उनके भीतर यह स्पष्ट होने लगा था कि केवल व्यक्तिगत उन्नति उनके जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकती। यही आत्ममंथन उन्हें आध्यात्मिक पथ की ओर ले गया। सन्यास ग्रहण करने के बाद वे स्वामी प्रणवानन्द कहलाये, किन्तु उनके लिये सन्यास का अर्थ संसार से विरक्ति नहीं, बल्कि संसार के प्रति और अधिक उत्तरदायित्व था।

जनजातीय समाज के कल्याण के लिये कार्य

भारत भ्रमण के दौरान स्वामी प्रणवानन्द जी का साक्षात्कार भारत के विभिन्न जनजातीय अंचलों से हुआ। उन्होंने देखा कि वनवासी और जनजातीय समाज प्रकृति के साथ गहरे सन्तुलन में जीवन जीता है, किन्तु शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा के अभाव में निरन्तर शोषण और उपेक्षा का शिकार बना हुआ है। उन्हें यह भी अनुभव हुआ कि बाहरी समाज द्वारा जनजातीय समुदाय को अक्सर पिछड़ा और असभ्य मान लिया जाता है, जबकि

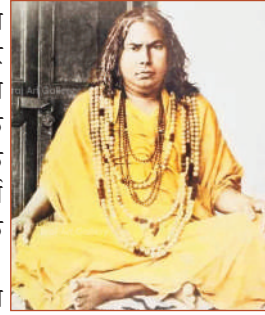
वास्तव में इस समाज के भीतर श्रम की गरिमा, सामूहिकता और आत्मनिर्भरता जैसे गहरे मूल्य विद्यमान हैं। इस समझ ने उनके भीतर यह संकल्प दृढ़ किया कि जनजातीय समाज के साथ कार्य करना केवल सेवा नहीं, बल्कि राष्ट्रीय दायित्व है।

इसी संकल्प की परिणति के रूप में स्वामी प्रणवानन्द जी ने सन 1917 में भारत सेवाश्रम संघ की स्थापना की। संघ की स्थापना माघी पूर्णिमा के दिन बाजितपुर सिद्धपीठ में हुई। भारत सेवाश्रम संघ केवल एक संस्था नहीं था, बल्कि सेवा और साधना को एक साथ जोड़ने का एक जीवन्त प्रयोग था। स्वामी प्रणवानन्द जी का मानना था कि यदि सेवा में आध्यात्मिक चेतना न हो, तो वह केवल दान बनकर रह जाती है, और यदि साधना समाज से कटी हो, तो वह आत्मकेन्द्रित हो जाती है। संघ का उद्देश्य दोनों को जोड़ना था। भारत सेवाश्रम संघ के कार्य का एक महत्वपूर्ण केन्द्र जनजातीय क्षेत्र बने। स्वामी प्रणवानन्द जी स्वयं इन क्षेत्रों में जाकर रहते थे। वे वहाँ के लोगों की भाषा, खानपान और जीवन शैली को अपनाने का प्रयास करते थे। उनका व्यवहार ऐसा था कि जनजातीय समाज उन्हें बाहरी या उपदेशक के रूप में नहीं, बल्कि अपने बीच का व्यक्ति मानने लगा।

जनजातीय समाज के लिये शिक्षा स्वामी प्रणवानन्द जी की दृष्टि में सबसे आवश्यक साधन थी। वे मानते थे कि शिक्षा केवल अक्षर ज्ञान नहीं है, बल्कि आत्मविश्वास और विवेक का विकास है। भारत सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित विद्यालयों में जनजातीय बच्चों को ऐसी शिक्षा दी जाती थी, जो उन्हें आधुनिक ज्ञान से जोड़ती थी, लेकिन उनकी सांस्कृतिक पहचान को नष्ट नहीं करती थी। स्वामी जी का विश्वास था कि यदि जनजातीय बच्चे अपनी जड़ों से कट जायेंगे, तो वे मानसिक रूप से कमजोर हो जायेंगे इसलिये शिक्षा के साथ संस्कृति और परम्परा का सम्मान भी सिखाया गया।

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में किए गये कार्य

स्वास्थ्य सेवा के क्षेत्र में भी संघ का कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। स्वामी प्रणवानन्द जी ने देखा कि जनजातीय क्षेत्रों में सामान्य बीमारियाँ भी इलाज के अभाव में गम्भीर रूप ले लेती हैं।



भारत सेवाश्रम संघ ने चिकित्सा शिविर, प्राथमिक उपचार केंद्र और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इन क्षेत्रों में कार्य किया। यह सेवा केवल दवा देने तक सीमित नहीं थी, बल्कि स्वच्छता, पोषण और स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतों में सुधार पर भी ध्यान दिया गया। स्वामी जी स्वयं बीमार व्यक्तियों के पास बैठते थे और उनके कष्ट को सुनते थे। उनके लिये सेवा एक मानवीय सम्बन्ध थी, न कि औपचारिक कार्य।

जनजातीय समाज की संस्कृति के संरक्षक

स्वामी प्रणवानन्द जी जनजातीय समाज की संस्कृति को अत्यन्त सम्मान की दृष्टि से देखते थे। वे उनके लोकगीतों, पर्वों, देवी-देवताओं और सामाजिक परम्पराओं को भारतीय संस्कृति व आत्मा का हिस्सा मानते थे। वे स्पष्ट रूप से कहते थे कि जनजातीय समाज को बदलने की नहीं, बल्कि समझने की आवश्यकता है। विकास के नाम पर यदि उनकी सांस्कृतिक पहचान को नष्ट किया गया, तो यह राष्ट्र की जड़ों को कमजोर करेगा। संघ के कार्यकर्ता जनजातीय समाज के साथ रहकर कार्य करते थे। वे उनके पर्व त्योहारों में सहभागी बनते थे और उनके दुःख सुख को साझा करते थे। इससे जनजातीय समाज में यह भावना जागृत हुई कि वे अकेले नहीं हैं और उनका जीवन भी राष्ट्र के लिये महत्वपूर्ण है। धीरे-धीरे इस समाज में आत्मगौरव और स्वाभिमान की चेतना विकसित हुई। स्वामी प्रणवानन्द जी मानते थे कि जब तक आत्मसम्मान नहीं जागेगा, तब तक कोई भी समाज सशक्त नहीं बन सकता।

महासमाधि

स्वामी प्रणवानन्द जी ने 8 जनवरी 1941 को कोलकाता में महा समाधि प्राप्त की। उनका जीवनकाल भले ही अधिक लंबा नहीं रहा, लेकिन इस सीमित समय में उन्होंने सेवा और संगठन की ऐसी मजबूत परंपरा स्थापित की, जो आज भी जीवित है। भारत सेवाश्रम संघ आज भी देश के विभिन्न जनजातीय और वंचित क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, आपदा राहत और सामाजिक सेवा के कार्य कर रहा है। ♦

हिन्दुत्व से ही होगा विश्व कल्याण : ऋतेश्वर महाराज

लखनऊ। आईटी चौराहे के पास रामाधीन सिंह उत्सव स्थल में सकल हिन्दू समाज रामदीन बस्ती विवेकानन्द नगर की ओर से शुक्रवार को हिन्दू सम्मेलन एवं समरसता भोज का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि ऋतेश्वर महाराज ने कहा कि हिन्दू सम्मेलन समाज को चेतना के उच्च स्तर तक ले जाने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि आज समाज का एक वर्ग अपनी संस्कृति पर मंडरा रहे संकट को समझ नहीं पा रहा है, जबकि कुछ लोग केवल सोशल मीडिया के माध्यम से स्वयं को ज्ञानी सिद्ध करने में लगे हैं। अंग्रेजी मानसिकता के प्रभाव में युवा पीढ़ी अपने स्वबोध से दूर होती जा रही है। हिन्दुत्व ही मानवता, समाज और विश्व-कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है।

सम्मेलन में पद्मश्री विद्या बिन्दु सिंह ने सनातन परम्परा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा

कि भारतीय संस्कृति में संस्कारों के माध्यम से व्यक्ति और समाज- दोनों का सर्वांगीण विकास होता है। उन्होंने कहा कि हमारी परम्पराएँ सामाजिक समरसता और नैतिक मूल्यों की मजबूत आधारशिला हैं, जिन्हें आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना हम सभी की जिम्मेदारी है।

मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रान्त प्रचारक कौशल किशोर ने संघ के शताब्दी वर्ष के अवसर पर प्रस्तावित कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संघ ने सात प्रकार के विशेष कार्यक्रमों का निश्चय किया है, जिनमें विश्व का सबसे बड़ा गृह सम्पर्क अभियान भी शामिल है। इस



अभियान के तहत देशभर में लगभग 48 लाख परिवारों से सम्पर्क किया गया है। उन्होंने कहा कि अकेले अवध प्रान्त में ही करीब 3000 हिन्दू सम्मेलन आयोजित किये जाने की योजना है, जिनका उद्देश्य समाज में सांस्कृतिक चेतना और राष्ट्रीय भावना को मजबूत करना है।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमित कुमार कुशवाहा ने किया। इस अवसर पर अनिल, घनश्याम दास अग्रवाल, सचिन गुप्ता, वीर बहादुर, अनुराग साहू सहित बड़ी संख्या में गणमान्य नागरिक और समाजसेवी उपस्थित रहे।

बाराबंकी की पूजा को मिला राष्ट्रीय बाल पुरस्कार

बाराबंकी। बाराबंकी जिले के सिरौली गौसपुर के डलईपुरवा की रहने वाली इण्टर की छात्रा पूजा पाल को राष्ट्रीय बाल दिवस के अवसर पर राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने किसानों के हित में किये गये नवाचार के लिये पुरस्कृत किया गया। पूजा ने किसानों की विभिन्न समस्याओं का अनुभव करते हुए धूल रहित श्रेशर का निर्माण कर कीर्तिमान रच दिया। पूजा ने यह अभिनव मॉडल कक्षा आठ में पूर्व माध्यमिक विद्यालय अगेहरा में पढ़ाई के दौरान बनाया था। पूजा का संघर्ष छप्पर वाली झोपड़ी से शुरू हुआ। जब स्कूल में उससे मॉडल बनाने को कहा गया तब उसके परिवार में आर्थिक तंगी थी जिसके कारण वह बाजार से सहायक सामग्री नहीं खरीद सकी। पूजा ने घर में पड़े कबाड़ से मॉडल बनाने का विचार किया। पुरानी टिन को जोड़कर श्रेशर बनाया और जाली के साथ पानी की टंकी लगाकर गेहूँ मड़ाई में निकलने वाली धूल को रोका। कूलर का मोटर लगाया और गेहूँ की चक्की में प्रयोग होने वाली थैली बाँधी। पूजा को यह मॉडल बनाने में तीन माह लगे। इस मॉडल से पूजा ने गेहूँ की मड़ाई में अनाज, भूसा व धूल को अलग करने का दावा किया। पाँच दिसम्बर 2022 को मण्डल स्तरीय इंस्पायर अवार्ड में मॉडल का चयन हुआ और फिर 11 अक्टूबर 2023 को राष्ट्रीय इंस्पायर अवार्ड में चयन के बाद केन्द्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री जितेन्द्र सिंह ने अवार्ड दिया। 30 जनवरी 2024 को आइआरआइएस नेशनल फेयर दिल्ली में स्थान मिला और 14 जून से 21 जून 2025 तक जापान की शैक्षणिक यात्रा की। जापान के वैज्ञानिकों ने भी पूजा के मॉडल को सराहा। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 75वें जन्म दिन पर बनी डाक्यूमेंट्री, एक अन्तहीन यात्रा में पूजा के मॉडल को स्थान मिला। बाराबंकी की किसी बेटी को पहली बार राष्ट्रपति भवन में पुरस्कार दिया गया। जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने पूजा को बाराबंकी का गौरव बताया।



जेएनयू में फिर लगे आपत्तिजनक नारे

दिल्ली पुलिस ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) में 5 जनवरी की रात में लगाये गये आपत्तिजनक और भड़काऊ नारों के मामले में केस दर्ज कर लिया। यह घटना उमर खालिद और शरजील इमाम की जमानत याचिका खारिज होने के बाद हुए कार्यक्रम के दौरान हुई। जेएनयू छात्र संघ की अध्यक्ष अदिति मिश्रा ने कहा कि विरोध प्रदर्शन वैचारिक था और किसी पर व्यक्तिगत हमला नहीं किया गया। वहीं विश्वविद्यालय प्रशासन ने कहा कि आपत्तिजनक नारे लगाना आचार संहिता का उल्लंघन है और इससे परिसर एवं राष्ट्र की सुरक्षा पर असर पड़ता है। प्रशासन ने शामिल स्टूडेंट्स के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई, जिसमें सस्पेंशन और निष्कासन शामिल है, करने की चेतावनी दी। जेएनयू रजिस्ट्रार ने भी इस मामले की गम्भीरता जताते हुए सुरक्षा शाखा को पुलिस जाँच में पूर्ण सहयोग देने का निर्देश दिया।



हिन्दुत्व की परिभाषा

मेरे गुरु श्रद्धेय पं. श्रीनारायण चतुर्वेदी के मुताबिक हिन्दू

दो तरह के होते हैं। एक तो संविधान की विवशता से हिन्दू हैं। चूँकि वह मुसलमान, ईसाई या और कोई नामधारी नहीं हो सकते, इसलिये वे हिन्दू हैं; क्योंकि जो इन सबसे परिगणित होने से बचा रहता है, वह हिन्दू है।

अन्यथा हिन्दू कहलाना ऐसे लोगों के लिये अर्थहीन है। ऐसे हिन्दू बनने की एक अलग प्रक्रिया है। आदमी आधुनिक कहलाना चाहता है, पूरी दुनिया का होना चाहता है। जो कुछ भी विचार आधुनिकता के उसे दिये हुए हैं या जिन्हें वह मानता है, आधुनिकता के साँचे हैं, उनमें आधुनिक होने का अर्थ मानता है हिन्दू के बाहर हो जाना, हिन्दू धर्म से तटस्थ हो जाना; बस कुछ नाजुक अवसरों पर विपत्ति पड़ने पर कुछ हिन्दू अनुष्ठान, पूजा-पाठ करना, वैसे समस्त कर्मकाण्ड को पाखण्ड कहना, पुराण को गप्प कहना, शास्त्र को अप्रमाण मानना, आस्था नामक पदार्थ से कन्नी काटना। यह संवैधानिक या शरीयतन हिन्दू का सामान्य लक्षण है। मैं यह हिन्दू नहीं हूँ। मैं हिन्दू कर्मकाण्ड, हिन्दू शास्त्र, हिन्दू आचारपद्धति, हिन्दू मन्दिर, हिन्दू तीर्थ, हिन्दू जनता इन सबके साथ गहरायी से जुड़ा हुआ हूँ पर मेरी मुसीबत यह है कि हिन्दुत्व की दुकानदारी से एकदम भयभीत हूँ। घोर भीतरी नास्तिकता, घोर बनावटी आस्तिकता से कुछ कम भयावह लगती है। पर असंख्य भाई जो तथाकथित शिक्षा से वंचित रह गये हैं। कहीं निरन्तर चली आ रही किसी अस्पृश्य भावना से हिन्दुत्व से जुड़े पदार्थों, आचारों, ग्रंथों और पीठों से जुड़े हैं, मेरे लिये सबसे अधिक सही हिन्दू हैं। उनके लिये हिन्दू होना सहज है, अनायास है। हिन्दू धर्म यदि समावेशक है, तो कहीं-न-कहीं व्यावर्तक भी है। अलग भी है। आपको यदि यह स्वीकार नहीं है कि सबको अपने रास्ते, अपने विवेक से चलने की छूट है, आपका अपना रास्ता एकमात्र रास्ता नहीं है, आपका अपना पथदर्शक या मसीहा एक मात्र पथदर्शक या मसीहा नहीं है, तो आप हिन्दू नहीं हो सकते, भले ही अपने चारों ओर की अलग-अलग निर्धारित कोटियों में स्थान पाने के कारण हिन्दू हो जाने की लाचारी हो। समस्त जीवन की अखण्डता और ओत-प्रोत होकर निरन्तर पूरकधर्मिता मानकर ही हर काम

होता है।



एक बात बिल्कुल साफ है, हिन्दुत्व का अर्थ खुली छूट नहीं है। स्वविवेक से निर्णय की छूट का अर्थ यह नहीं है कि स्वपहचान की विधि का अतिक्रमण हो। स्व की पहचान तब तक असमान है, जब तक मनुष्य चारों ऋणों से मुक्त होने की बात नहीं सोचता। इन ऋणों से मुक्ति के लिये ऋषियों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है, चाहे वाचिक परम्परा से चाहे शास्त्रों के पठन-पाठन से। मनुष्यता का चरम प्रयोजन है आत्मविस्तार, अपने को विश्व के कण-कण में पाना, अपने को इतना हलका कर लेना कि सबमें समा सकना, सबमें भर सकना। इन ऋणों की अदायगी हो, न हो इनकी आंशिक भावना भी हो, तो जीवन की सर्वसमता और निरन्तरता की पहचान कुछ-न-कुछ स्पष्ट होती है। यही हिन्दू-धर्म की आधारशिला है।

हिन्दू-धर्म इसीलिये निरपेक्ष द्वैत को स्वीकार नहीं करता-न धर्म-अधर्म, न देव-असुर, न सद्-असद्, न मनुष्य-प्रकृति, न जड़-चेतन, न विषय-विषयी। हर द्वैत में सापेक्षता ही देखता है, पाता है और पाना चाहता है। यह सापेक्षता जीवन के सम्पूर्ण और परस्पर सम्बद्ध गतिशील भाव को ही पाकर है। यदि इस सम्पूर्ण भाव की अपेक्षा करके कोई कार्य किया जाता है तो वह जय है, वह धर्म है, वह चैतन्य से आलोकित है, वह दिव्य है, यदि नहीं तो वह अधर्म है, असद्, अवास्तविक है, हेय है, आसुर्य है, जड़ता से आछन्न है। अपने-आप एकान्त रूप से कोई कुछ नहीं है। समग्र सत्य प्रवाह के साथ जिस रूप में सम्बद्ध है, इसी से उसकी परिभाषा होती है।

कहा जा सकता है, वह भाव तो बहुत ही स्वच्छन्द आचरण को जन्म देगा या फिर दम्भ को जन्म देगा, इसके कारण प्रणय, संकल्प सब, व्यर्थ हो जायेंगे। उसका समाधान यह है कि समग्रता का भाव बिना अनुभव के पाया नहीं जा सकता, जबकि अनुभव की प्रक्रिया ही भाव है। वह अनुभव तीन प्रकार से होता है। एक तो होता है, शास्त्र के मनन से, दूसरा होता है, ऐसा जीवन जीने से जिसमें यह भाव आंशिक रूप से चरितार्थ हो, ऐसी उपासना करने से जिसमें सृष्टि की सफलता का अनुसन्धान हो और तीसरा प्रकार है निश्चल होकर, अकिंचन होकर, रिक्त होकर, शून्य होकर, सकल की,

सम्पूर्ण की, ईश्वर की सार्थकता भी निश्चलता में है यह साधना द्वारा पाने से। तीसरा उपाय मन के लिये सुलभ नहीं है, तीसरा उपाय बड़े अभ्यास से और साधकों की परम्परा के साथ जुड़ने से आता है, इसी स्तर पर शुरू का महत्त्व है, नहीं तो हिन्दू होने के लिये दीक्षा की आवश्यकता नहीं। बस स्वेच्छा से वरण करने की बात है, क्या हम सामान्य बनकर जीवन जीना चाहते हैं, क्या सर्वमत बनकर जीना चाहते हैं। क्या हम सबमें ओत-प्रोत होना चाहते हैं, क्या हम मनुष्य के भाव को महत्त्व देना चाहते हैं। क्या हम आत्मअनुभव को और शास्त्र निर्दिष्ट विधि से अपनी तैयारी के अनुरूप सोपान से चढ़ते हुए अन्य अनुभव को प्रमाण मानने के लिये तैयार हैं। क्या अपने धर्म में रहते हुए भी सबके धर्म की अपनी-अपनी दृष्टि से विशिष्ट महत्ता है, यह स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। क्या हम संस्था को और संस्थाओं को स्वीकार करते हुए भी अपनी संस्था की सर्वोच्चता का भाव तजने के लिये तैयार हैं? इन प्रश्नों का उत्तर अपने भीतर ही में जिसे मिले, वह अपने को हिन्दू कह सकता है। हिन्दू धर्म में अनेक संस्थाएँ हैं, पर हिन्दू धर्म स्वयं कोई संस्था नहीं है। विवाह पर किसी संस्था या संस्थाचार्य की मुहर की आवश्यकता नहीं है। आवश्यकता है मंत्र के उच्चारण की और मंत्र के उच्चारण में अपने भीतर के देवता के साक्ष्य की। संस्थाहीनता संगठनहीनता लगती है और दुर्बलता लगती है, पर यही वास्तविक शक्ति है, यह संकल्प में समाहित उदारता हिन्दू धर्म की वास्तविक शक्ति है, हर एक कार्य के पीछे एक संकल्प होता है, जिसमें पूरे ब्रह्माण्ड में स्थित अपने देशबिन्दु तक सृष्टि के प्रथम स्पंद से लेकर आज तक के समय का स्मरण किया जाता है।

आज जो हिन्दू धर्म इतना अस्पष्ट, अपरिभाष्य लगता है, उसका कारण अभ्यास से विमुखता या तटस्थता है, साधना से अधिक सिद्धि की खोज है। शीघ्र कुछ अलौकिक लाभ बिना प्रयत्न के पाने का लोभ है। हिन्दू धर्म वस्तुतः इस लाभ के कारण कुहराच्छन्न हो गया है और इसमें मशाल लेकर चलने वाले बहुत प्रबल हो गये हैं। हम भूल गये हैं हिन्दू धर्म मशालों का जुलूस नहीं, वह अन्तर के दीपों की जीवन की गंगा की धार में छोड़ी हुई मालिका है, जिसमें एक दीप दूसरे को देख-देखकर दिपता रहता है। कोई बुझाता है तो उसका स्थान दूसरा प्रदीप ले लेता है आत्मदीप के आह्वान के लिये।

(‘हिन्दू, हिन्दुत्व और भारतीय संस्कृति’ पुस्तक से साभार)

केजीएमयू का लव जिहादी रमीज गिरफ्तार, दाखिला होगा निरस्त



लखनऊ। केजीएमयू की महिला रेजिडेंट के यौन शोषण और धर्मान्तरण के प्रयास के आरोपी डॉक्टर रमीज को पुलिस ने सिटी स्टेशन के पास से गिरफ्तार कर लिया। वह अपने किराये के कमरे से सामान लेने आया था। इसके बाद कोर्ट में सरेण्डर करने की फिराक में था। उस पर 50 हजार रुपये का इनाम घोषित था। आरोपी को मेडिकल परीक्षण के बाद कोर्ट में पेश किया गया। कोर्ट के आदेश पर उसे जेल भेज दिया गया। रिपोर्ट दर्ज होने के बाद रमीज कुछ लोगों की मदद से नेपाल भाग गया था। इस दौरान वह पीलीभीत, शामली, सहारनपुर और दिल्ली में छिपा रहा। शुक्रवार को वह राजधानी में अपने कमरे से सामान लेने पहुँचा, तभी पहले से सक्रिय पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। पुलिस की पूछताछ में उसने ज्यादातर सवालों पर चुप्पी साधे रखी।

रद्द होगा दाखिला

डॉ. रमीज उद्दीन नायक का दाखिला रद्द होगा। विशाखा कमेटी की रिपोर्ट के आधार पर केजीएमयू प्रशासन ने चिकित्सा शिक्षा विभाग के महानिदेशक (DGME) को पत्र लिखकर दाखिला रद्द करने की सिफारिश की है। अब केजीएमयू में आगे की पढ़ाई नहीं कर पायेगा। यह जानकारी केजीएमयू कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानन्द ने दी।

कुलपति डॉ. सोनिया नित्यानन्द ने करीब सवा साल पहले आरोपी जूनियर रेजिडेंट डॉ. रमीज उद्दीन नायक ने नीट के माध्यम से पैथोलॉजी विभाग में एमडी कोर्स में दाखिला लिया था। उन्होंने बताया कि आरोपी जूनियर रेजिडेंट डॉ. रमीज उद्दीन नायक पर विभाग की दूसरी महिला रेजिडेंट डॉक्टर ने गम्भीर आरोप लगाये। इस सम्बन्ध में 22 दिसम्बर को सुबह पीड़िता ने विशाखा कमेटी से शिकायत की। सात सदस्यीय

विशाखा कमेटी ने दोपहर में बैठकर की। पीड़ित व आरोपी के बयान दर्ज किये।

पीड़िता ने शिकायती पत्र में लिखा कि 6 जुलाई, 2025 को उसकी डॉ. रमीज से मुलाकात हुई थी। शादी का झांसा देकर डॉ. रमीज ने यौन उत्पीड़न कराया। फिर गर्भपात कराया। सितम्बर में पता चला डॉ. रमीज पहले भी किसी हिन्दू डॉक्टर से शादी कर चुका है। यह जानने के बाद पीड़िता ने आरोपी रेजिडेंट से नाता तोड़ने का फैसला किया। 14 दिसम्बर को आरोपी ने पीड़िता को वॉट्सएप पर पहली पत्नी को छोड़ने का दावा किया लेकिन पीड़िता ने कोई भी सम्बन्ध न रखने की बात कही। इस पर आरोपी रेजिडेंट ने उसकी अश्लील फोटो, वीडियो और वॉट्सएप चैट सोशल मीडिया में वायरल करने की धमकी दी।

पीड़िता मानसिक रूप से परेशान हो गयी। इतने पर भी आरोपी शान्त नहीं हुआ। वह लगातार पीड़िता का उत्पीड़न करता था। आजिज आकर पीड़िता ने 17 दिसम्बर को नींद की गोलियाँ खाकर आत्महत्या का प्रयास किया। कुलपति ने बताया कि शिकायत के तुरन्त बाद विशाखा कमेटी की बैठक हुई। जिसमें पीड़िता, आरोपी व विभाग के अन्य लोगों के बयान दर्ज किये गये। जाँच रिपोर्ट के आधार आरोपी रेजिडेंट को निलम्बित कर दिया गया। उसके परिसर में आने पर रोक लगा दी गयी थी। उन्होंने बताया कि 15 दिन मामले की विस्तृत जाँच चली। अन्तिम जाँच रिपोर्ट में डॉ. रमीज का केजीएमयू से दाखिला रद्द करने का फैसला किया गया है। इस सम्बन्ध में चिकित्सा शिक्षा महानिदेशक को पत्र लिखा गया है। उन्होंने बताया के केजीएमयू के इतिहास में पहली बार किसी पीजी रेजिडेंट का दाखिला रद्द किया गया है।

कब क्या हुआ?

17 दिसम्बर : पीड़ित डॉक्टर ने दवा का ओवरडोज लेकर आत्महत्या की कोशिश की, गम्भीर हालत में केजीएमयू ट्रॉमा सेंटर में भर्ती कराया गया।

19 दिसम्बर : पीड़ित को अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी।

21 दिसम्बर (सुबह 10 बजे) : केजीएमयू को पीड़ित से लिखित शिकायत मिली जिसमें मानसिक, भावनात्मक और यौन शोषण का आरोप लगाया गया था।

22 दिसम्बर (दोपहर 2 बजे) : विशाखा कमेटी की पहली मीटिंग हुई, पीड़ित, आरोपी और आरोपी के पिता के बयान रिकॉर्ड किये गये।

22 दिसम्बर : आरोपी डॉक्टर को सस्पेंड कर दिया गया; केजीएमयू कैम्पस में एण्ट्री बैन कर दी गयी।

23 दिसम्बर के बाद : आरोपी फरार हो गया; घर पर ताला लगा मिला, फोन बन्द थे; पुलिस को सूचना दी गयी।

07 जनवरी : विशाखा कमेटी की आखिरी मीटिंग हुई, सबूतों की समीक्षा की गयी और सख्त अनुशासनात्मक कार्रवाई की सिफारिश करते हुए रिपोर्ट सौंपी गयी।

09 जनवरी : केजीएमयू ने रेजिडेंट डॉक्टर डॉ. रमीजुद्दीन का एडमिशन खत्म करने के लिए DGME को सिफारिश भेज दी।

अखाड़ा बना वीसी कार्यालय

केजीएमयू वीसी की प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद करीब एक बजे अपर्णा यादव अचानक विश्वविद्यालय प्रेस कॉन्फ्रेंस करने पहुँच गयीं। उनके साथ करीब 25-30 समर्थक और कार्यकर्ता भी मौजूद थे। वहाँ पहुँचीं तो वीसी चैम्बर बन्द मिला जिसके बाद अपर्णा यादव के समर्थकों ने हंगामा शुरू कर दिया।

अपर्णा यादव ने कहा कि वी.सी. हमसे बिना मिले ही चली गयी। वह हमसे बात तक नहीं करना चाहती। महिला होकर भी महिला की दर्द नहीं समझती है। पीड़िता एक हफ्ते तक कई विभागों में शिकायत की लेकिन कार्रवाई नहीं हुई। इसके बाद वह महिला आयोग

में शिकायत करने आई तो उसे डराया और धमकाया गया। उनके जाने के बाद केजीएमयू के सभी डॉक्टर और वी.सी. वहीं पर इकट्ठा हो गये और दोबारा प्रेस कॉन्फ्रेंस की।

केजीएमयू के चीफ प्रॉक्टर ने दी तहरीर

केजीएमयू के प्रवक्ता डॉ. केके सिंह ने कहा- जिन लोगों ने यूनिवर्सिटी परिसर में उत्पात मचाया है उनके खिलाफ चीफ प्रॉक्टर आरएस कुशवाहा ने चौक थाने में तहरीर दी है।

हड़ताल की चेतावनी

केजीएमयू शिक्षक संघ के अध्यक्ष डॉक्टर केके सिंह ने बताया कि इस तरह का कृत्य बिल्कुल बर्दाश्त नहीं है। उन्होंने कहा अगर मुकदमा दर्ज नहीं होता है तो डॉक्टर हड़ताल पर जाएंगे।

एचओडी को थी पूरी जानकारी

अपर्णा यादव ने प्रेस वार्ता में बताया कि उनकी पीड़िता से व्यक्तिगत बातचीत हुई है। पीड़िता ने बताया कि, उसने घटना की पूरी जानकारी केजीएमयू के सम्बन्धित एचओडी को दी थी, लेकिन इसके बावजूद कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई।

बयान बदलने का दबाव

उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि पीड़िता और इस मामले में बयान देने वाले अन्य लोगों पर लगातार दबाव बनाया जा रहा है कि वे अपने बयान बदल लें। अपर्णा यादव ने बताया कि केजीएमयू के एक वरिष्ठ डॉक्टर ने पीड़िता से

केजीएमयू वीसी ऑफिस से जिहादियों को समर्थन !

हिन्दू संगठनों का आरोप है कि केजीएमयू के कुलपति ऑफिस ही विशेष रूप से कट्टरपंथी मुस्लिमों के समर्थन में लगा हुआ है। इसीलिए इस मामले में कुलपति ने ढीला-ढाला रवैया अपनाया हुआ है। कुलपति ने अपने ऑफिस में एक इण्टर पास रिटायर्ड कर्मचारी अब्बास को अपना ओएसडी



केजीएमयू कुलपति कार्यालय पर तकरीर करते कट्टरपंथी मुस्लिम।

बनाकर नियुक्त कर दिया है और एड हॉक पर काम करने वाले इस कर्मचारी को नियम विरुद्ध परमानेंट कर्मचारी वाली पेंशन दिला दिया गया। यह समझ के बाहर है कि आखिर एक इण्टर पास रिटायर्ड मुस्लिम व्यक्ति में कुलपति को ऐसा क्या दिख गया कि सारे नियम कायदे बदलकर उसे इस तरह से विश्वविद्यालय के सबसे महत्वपूर्ण ऑफिस में बैठा दिया गया? बताया जा रहा है कि इसी के चलते विश्वविद्यालय में जिहादियों को खुला संरक्षण मिल रहा है। वीसी ऑफिस को इस्लामी तकरीरों का अड्डा बनाया गया है। इसी तरह से यह भी सूचना आ रही है कि विश्वविद्यालय के क्रिटिकल केयर विभाग में कुछ कट्टरपंथी डॉक्टर बिना विश्वविद्यालय को सूचना दिए विदेश यात्रा कर आए तो कुछ मध्य एशिया के देशों में इण्टरव्यू भी दे आए, लेकिन जब विभागाध्यक्ष ने कार्रवाई के लिये चिट्ठी लिखी तो उसे कूड़े के ढेर में डाल दिया गया और कुलपति ऑफिस ने इन लोगों पर विशेष दया दृष्टि बनायी। कथित तौर पर यह भी बताया जा रहा है कि बिना बताये विदेश यात्रा के आरोप में इसी कुलपति ने एक हिन्दू शिक्षक को उसके रिटायरमेंट के एक दिन पहले विश्वविद्यालय से निष्कासित किया था परन्तु मुस्लिम संकाय सदस्यों के लिये नियम अलग हैं। ऐसा लग रहा है कि किंग जॉर्ज मेडिकल यूनिवर्सिटी का वीसी ऑफिस ही हिन्दू विरोधी गतिविधियों का केन्द्र बन गया है। इस मामले की सच्चाई सामने लाने की आवश्यकता है और यदि उपरोक्त बातें असत्य हैं तो भी मामले की संवेदनशीलता देखते हुए इसकी जांच आवश्यक है।

यह तक पूछा कि वह महिला आयोग क्यों गयी, जिससे पूरे मामले की गंभीरता और बढ़ जाती है।

वरिष्ठ डॉक्टरों पर आरोप

प्रेस वार्ता में अपर्णा यादव ने आरोप लगाया कि आरोपी को भगाने में प्रो. वाहिद अली और प्रो.

सुरेश बाबू की भूमिका संदिग्ध है। उनका कहना है कि मामला सामने आने के बाद करीब दस दिन तक इन दोनों की आरोपी से बातचीत होती रही, लेकिन इसके बावजूद केजीएमयू प्रशासन ने इनके खिलाफ कोई जाँच शुरू नहीं की। ❖

धर्म रक्षक बनकर भूले बिसरों को लायें वापस : अनिल जी

अम्बेडकरनगर। विश्व हिन्दू परिषद के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में शुक्रवार को शहर के बीएन इन्टर कॉलेज के मैदान पर विराट हिन्दू सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में लोगों की सहभागिता रही। सम्मेलन के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्वी उत्तर प्रदेश क्षेत्र प्रचारक अनिल ने समाज में एकजुटता और सतर्कता पर जोर दिया।

मुख्य वक्ता अनिल ने लव-जिहाद के मुद्दे पर लोगों को सचेत रहने की अपील करते हुए कहा कि वर्तमान समय में हिन्दू समाज को जाति के नाम पर विभाजित करने के प्रयास हो रहे हैं। उन्होंने कहा कि धर्म रक्षक बनकर उन लोगों तक पहुँचने की आवश्यकता है, जो किसी कारणवश हिन्दू धर्म छोड़कर अन्य धर्मों

में चले गये हैं। ऐसे लोगों से संवाद कर उन्हें विश्वास में लेकर घर वापसी कराना समाज की जिम्मेदारी है।

उन्होंने अयोध्या आन्दोलन का उल्लेख करते हुए कहा कि जब तत्कालीन सरकार ने कारसेवकों को रोकने की कोशिश की थी और अयोध्या में कड़े प्रतिबन्ध लगाये गये थे, तब भी विहिप के आह्वान पर देशभर से कारसेवक वहाँ पहुँचे। उन्होंने कहा कि हमें महापुरुषों को जातियों में बाँटने की प्रवृत्ति से बचना होगा और एकजुट रहकर धर्म को मजबूत बनाना होगा। अनिल ने कहा कि विधर्मियों ने लम्बे समय तक शासन करने के बाद भी हिन्दुओं



को विभाजित नहीं कर पाये, इसलिये अब जाति के आधार पर राजनीतिक दल बनाकर समाज को तोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। अयोध्या से आये फलाहारी बाबा ने भी हिन्दू समाज से एकजुट होने और सामाजिक समरसता बनाये रखने की अपील की। कार्यक्रम के दौरान मंच पर भारत माता की भव्य झाँकी प्रस्तुत की गयी, जिसने लोगों का ध्यान आकर्षित किया। वहीं 'छावा' फिल्म पर आधारित कलाकारों की प्रस्तुति ने दर्शकों को भाव-विभोर कर दिया। इससे पहले शहर में मोटरसाइकिल रैली भी निकाली गयी, जिसमें युवाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

कला, संस्कार और राष्ट्रचेतना के साधक बाबा योगेन्द्र

बाबा योगेन्द्र का जन्म 7 जनवरी, 1924 को उत्तर प्रदेश के बस्ती जनपद में हुआ था। उनके पिता बाबू विजय बहादुर श्रीवास्तव एक प्रतिष्ठित अधिवक्ता थे तथा कांग्रेस और आर्यसमाज से जुड़े हुए थे। बाल्यावस्था में ही माँ का साया उठ जाने के कारण उनका पालन-पोषण पड़ोस की माताओं के स्नेह और संस्कारों में हुआ। यही प्रारम्भिक जीवन उन्हें संवेदनशील, सहनशील और समाजोन्मुख व्यक्तित्व प्रदान करता है।

छात्र जीवन में गोरखपुर में उनका सान्निध्य संघ के समर्पित प्रचारक नानाजी देशमुख से हुआ। यह केवल एक परिचय नहीं, बल्कि जीवन की दिशा बदल देने वाला संग सिद्ध हुआ। एक बार तेज ज्वर ने उन्हें पूरी तरह आशक्त कर दिया। उस कठिन घड़ी में नानाजी ने बिना किसी संकोच के उन्हें अपने कंधों पर उठाया और लगभग डेढ़ किलोमीटर का पथ पैदल तय कर पड़रौना पहुँचे, ताकि समय पर उनका उपचार हो सके। उस निःस्वार्थ सेवा, करुणा और त्याग ने योगेन्द्र जी के हृदय को गहरे तक स्पर्श किया। यह अनुभव उनके लिये किसी उपदेश से कहीं अधिक प्रभावशाली सिद्ध हुआ। शिक्षा पूर्ण करने के पश्चात् उन्होंने जीवन के सुख-सुविधाओं से परे जाकर स्वयं को संघ कार्य के लिये समर्पित करने का दृढ़ संकल्प लिया।

देश-विभाजन के त्रासद काल में उन्होंने एक ऐसी प्रदर्शनी की रचना की, जो केवल चित्रों का संयोजन नहीं, बल्कि राष्ट्र के घायल हृदय की मौन पुकार थी। जिसने भी इस प्रदर्शनी को देखा, वह अपने आँसू पोंछने को विवश हो गया। यहीं से कला उनके हाथों में संवेदना, चेतना और राष्ट्रीय जागरण का सशक्त माध्यम बन गयी। इसके बाद प्रदर्शिनियों का एक अविराम क्रम प्रारम्भ हुआ शिवाजी, धर्म गंगा, जनता की पुकार, जलता कश्मीर, संकट में गोमाता, 1857 के स्वाधीनता संग्राम की अमर गाथा, विदेशी षड्यंत्र और माँ की पुकार जैसी प्रदर्शिनियों ने समाज के संवेदनशील मन को झकझोर दिया। इसी क्रम में 'भारत की विश्व को देन' नामक प्रदर्शनी ने विदेशों में भी प्रशंसा प्राप्त की और भारतीय सांस्कृतिक आत्मा की गूँज विश्व पटल तक पहुँची।

सन् 1981 में बाबा योगेन्द्र ने यादराम

देशमुख और श्याम कृष्ण जैसे समर्पित सहयोगियों के साथ मिलकर संस्कार भारती की स्थापना की। यह केवल एक संस्था का जन्म नहीं था, बल्कि भारतीय कला और सांस्कृतिक चेतना को संगठित स्वर देने का संकल्प था। संस्कार भारती का आगरा से विशेष आत्मीय सम्बन्ध रहा, क्योंकि इसका पंजीकृत तथा प्रमुख केन्द्र यहीं स्थापित किया गया। आगरा के माधव भवन में इसका कार्यालय बना, जो शीघ्र ही कलाकारों, साधकों और सांस्कृतिक कर्मियों का जीवन्त केन्द्र बन गया। यहीं से संस्कार भारती की विचारधारा और रचनात्मक ऊर्जा ने पूरे देश में प्रसार पाया।

योगेन्द्र बाबा जी के अथक परिश्रम, दूरदर्शी नेतृत्व और निःस्वार्थ साधना के फलस्वरूप संस्कार भारती आज कलाकारों की एक अग्रणी संस्था के रूप में प्रतिष्ठित हो चुकी है। इसकी ज्योति अब केवल देश तक सीमित नहीं रही, बल्कि विश्व के अनेक देशों में इसकी शाखाएँ स्थापित होकर भारतीय कला-संस्कार की सुगंध बिखेर रही हैं। योगेन्द्र जी ने कभी स्थापित ख्याति के मोह में स्वयं को नहीं बाँधा। वे बड़े कलाकारों की परिक्रमा के बजाय नवांकुर प्रतिभाओं की खोज में लगे रहे। जिन हाथों में संकोच था, उन्हें उन्होंने मंच दिया; जिन आँखों में सपने थे, उन्हें विश्वास दिया। समय के साथ वही नवोदित कलाकार परिपक्व होकर कला के शिखर तक पहुँचे। इस प्रकार योगेन्द्र जी ने केवल संस्था नहीं खड़ी की, बल्कि कलाकारों की एक नयी, सजग और समर्पित सेना तैयार कर दी, जो आज संस्कृति की रक्षा और सृजन दोनों का दायित्व निभा रही है।

योगेन्द्र बाबा जी ने बिखरे हुए हजारों कलासाधकों को एक सूत्र में बाँधने का दुष्कर और ऐतिहासिक कार्य कर दिखाया। यह केवल संगठन नहीं, बल्कि संवेदनाओं, साधना और सृजन को एक साझा उद्देश्य की माला में पिरोने की साधना थी। जिन कलाकारों की राहें अलग-अलग थीं, जिनकी भाषा, विधा और शैली भिन्न थी, उन्हें उन्होंने आपसी संवाद, विश्वास और सांस्कृतिक चेतना के धागे से जोड़ा। यह कार्य किसी प्रशासनिक आदेश से नहीं, बल्कि उनके

व्यक्तित्व की गरिमा, दृष्टि की व्यापकता और कला के प्रति उनके गहरे सम्मान से सम्भव हुआ। इस प्रकार योगेन्द्र जी ने कला को केवल मंच तक सीमित न रखकर उसे सामाजिक एकता और सांस्कृतिक जागरण का सशक्त माध्यम बना दिया।

बाबा योगेन्द्र नानाजी देशमुख और अटल बिहारी वाजपेयी जैसे युगद्रष्टाओं के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य किया। साथ ही श्रम और सामाजिक चेतना के प्रखर चिन्तक दत्तोपन्त ठेंगड़ी के साथ उनका सहयोग भी रहा। इन महान व्यक्तित्वों के सान्निध्य में कार्य करते हुए बाबा योगेन्द्र ने संगठन, विचार और संस्कार तीनों को एक सूत्र में पिरोने की दुर्लभ क्षमता विकसित की।

सन् 2018 में बाबा योगेन्द्र को भारत सरकार द्वारा पद्मश्री सम्मान प्रदान किया गया, जो देश का चौथा सर्वोच्च नागरिक सम्मान है। यह अलंकरण केवल एक पदक नहीं था, बल्कि कला, संस्कृति और संस्कारों की साधना में समर्पित उनके दीर्घ जीवन की सार्वजनिक स्वीकृति थी। उस क्षण राष्ट्र ने उनके मौन तप, सतत साधना और सांस्कृतिक चेतना को शब्द दिये और उनके व्यक्तित्व को सम्मान के स्वर्णाक्षरों में अंकित कर दिया। वयोवृद्ध अवस्था में भी उनका उत्साह और सक्रियता क्षीण नहीं हुई थी। दो अप्रैल, 2021 को वे संस्कार भारती के दिल्ली स्थित नवनिर्मित कार्यालय 'कला संकुल' के उद्घाटन अवसर पर ससम्मान उपस्थित रहे। इस गरिमामय कार्यक्रम में उनके साथ सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत तथा सरकार्यवाह डॉ. दत्तात्रेय होसबाले की उपस्थिति ने आयोजन को और भी ऐतिहासिक बना दिया।

संस्कार भारती के संस्थापक, पद्मश्री सम्मानित बाबा योगेन्द्र का देहावसान 10 जून 2022, शुक्रवार भीमसेन निर्जल एकादशी के पावन दिन लखनऊ स्थित डॉ. राममनोहर लोहिया अस्पताल में प्रातः 08 बजे हो गया। उनका महाप्रयाण केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं था, बल्कि कला, संस्कार और राष्ट्रचेतना से समर्पित एक युग की शान्त विदायी थी। ❖

आम की फसल की करें देखभाल



इस मौसम में आम के बौर प्रायः निकलने लगते हैं जिसमें इस समय आम में गुच्छा रोग का प्रकोप शुरू हो जाता है।

मैंगो मैलफॉर्मेशन (आम का गुच्छा रोग) के प्रबन्धन के लिए प्रभावित टहनियों की छंटाई, जैविक फफूंदनाशकों (जैसे ट्राइकोडर्मा विरिडे) और रासायनिक दवाओं (जैसे कार्बेन्डाजिम) का छिड़काव, और सूक्ष्म पोषक तत्वों (जिंक, बोरॉन) का उपयोग करें; स्वस्थ पौधे चुनें, उर्वरकों में सन्तुलन रखें (नाइट्रोजन कम), और बाग की स्वच्छता बनाये रखें ताकि यह रोग नियंत्रित रहे और पूरे बाग में न फैले।

प्रबंधन के उपाय

लक्षण पहचानें : बौनी, मोटी, गुच्छेदार पत्तियाँ या फूलों के गुच्छे देखें।

1. छंटाई करें : प्रभावित, विकृत टहनियों और कलियों को स्वस्थ हिस्से से 15-20 सेमी नीचे से काट दें और नष्ट कर दें।

स्वच्छता : बाग में और कटाई के औजारों को साफ रखें, क्योंकि यह

फफूंद से फैलता है।

2. रासायनिक और जैविक उपचार

फफूंदनाशक : कार्बेन्डाजिम का 1 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।

जैविक नियंत्रण :

ट्राइकोडर्मा विरिडी (Trichoderma viride) जैसे जैविक

फफूंदनाशक का प्रयोग करें।

हार्मोन/पोषक तत्व :

अक्टूबर में NAA (100-200 पीपीएम) का छिड़काव करें।

प्लानोफिक्स (Planofix) या कोबाल्ट सल्फेट (Cobalt Sulfate) का छिड़काव करें (1 मिली/3 लीटर पानी की दर से)।

जिंक (Zinc), बोरॉन (Boron), और कॉपर (Copper) जैसे सूक्ष्म पोषक तत्व दें।

3. कृषि पद्धतियाँ

रोग-मुक्त पौधे : रोपण के लिये हमेशा स्वस्थ और प्रमाणित पौधे चुनें।

उर्वरक संतुलन : अत्यधिक नाइट्रोजन से बचें, क्योंकि यह रोग बढ़ा सकता है। सन्तुलित एनपीके दें।

भगवान की खोज

तेरहवीं सदी में महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध सन्त हुए जिनका नाम था सन्त नामदेव। कहा जाता है कि जब वे बहुत छोटे थे तभी से भगवान की भक्ति में डूबे रहते थे।

एक बार सन्त नामदेव अपने शिष्यों को ज्ञान-भक्ति का प्रवचन दे रहे थे। तभी श्रोताओं में बैठे किसी शिष्य ने एक प्रश्न किया, “गुरुवर, हमें बताया जाता है कि ईश्वर हर जगह पर मौजूद है, पर यदि ऐसा है तो वो हमें कभी दिखायी क्यों नहीं देता, हम कैसे मान लें कि वो सचमुच हमारे आस-पास ही है, और यदि वो है तो हम उसे कैसे प्राप्त कर सकते हैं?”



नामदेव मुस्कराये और एक शिष्य को एक लोटा पानी और थोड़ा सा नमक लाने का आदेश दिया।

शिष्य तुरन्त दोनों चीजें लेकर आ गया।

वहाँ बैठे शिष्य सोच रहे थे कि भला इन चीजों का प्रश्न से क्या सम्बन्ध। तभी सन्त नामदेव ने पुनः उस शिष्य से कहा, “पुत्र, तुम नमक को लोटे में डाल कर मिला दो।”

शिष्य ने ठीक वैसा ही किया।

सन्त बोले, “अब बताओ, क्या इस पानी में किसी को नमक दिखायी दे रहा है?” सबने ‘नहीं’ में सिर हिला दिया।

“ठीक है!, अब कोई जरा इसे चख कर देखे, क्या चखने पर नमक का स्वाद आ रहा है?”, सन्त ने पूछा।

“जी”, एक शिष्य पानी चखते हुए बोला।

“अच्छा, अब जरा इस पानी को कुछ देर उबालो।”, सन्त ने निर्देश दिया।

कुछ देर तक पानी उबलता रहा और जब सारा पानी भाप बन कर उड़ गया, तो सन्त ने पुनः शिष्यों को लोटे में देखने को कहा और पूछा, “क्या अब आपको इसमें कुछ दिखायी दे रहा है?”

“जी, हमें नमक के कुछ कण दिख रहे हैं।”, एक शिष्य बोला।

सन्त मुस्कराये और समझाते हुए बोले, “जिस प्रकार आप पानी में नमक का स्वाद तो अनुभव कर पाये पर नमक को देख नहीं पाये उसी प्रकार इस जग में तुम्हें ईश्वर हर जगह दिखायी नहीं देता पर तुम उसे अनुभव कर सकते हो और जिस तरह अग्नि के ताप से पानी भाप बन कर उड़ गया और नमक दिखायी देने लगा उसी प्रकार तुम भक्ति, ध्यान और सत्कर्म द्वारा अपने विकारों का अन्त कर भगवान को प्राप्त कर सकते हो।

कबूतर का जोड़ा और शिकारी

एक जगह एक लोभी और निर्दय व्याध पक्षियों को मारकर खाना ही उसका काम था। इस भयंकर काम के कारण उसके प्रियजनों ने भी उसका त्याग कर दिया था। तब से वह अकेला ही, हाथ में जाल और लाठी लेकर जंगलों में शिकार के लिये घूमा करता था।

एक दिन उसके जाल में एक कबूतरी फँस गयी। अचानक मूसलधार वर्षा होने लगी। सदीं से ठिठुर कर व्याध आश्रय की खोज करने लगा। थोड़ी दूरी पर एक पीपल का वृक्ष था। उसके खोल में घुसते हुए उसने कहा- 'यहाँ जो भी रहता है, मैं उसकी शरण जाता हूँ। इस समय जो मेरी सहायता करेगा उसका जन्मभर ऋणी रहूँगा।'

उस खोल में वही कबूतर रहता था जिसकी पत्नी को व्याध ने जाल में फँसाया था। कबूतर उस समय पत्नी के वियोग से दुःखी होकर विलाप कर रहा था। पति को प्रेमातुर पाकर कबूतरी का मन आनन्द से नाच उठा। उसने मन ही मन सोचा- मेरे धन्य भाग्य हैं जो ऐसा

पति मिला है। पति की प्रसन्नता से ही स्त्री-जीवन सफल होता है। यह विचार कर वह पति से बोली- 'पतिदेव! मैं तुम्हारे सामने हूँ। इस व्याध ने मुझे बाँध लिया है। यह मेरे पुराने कर्मों का फल है। हम अपने कर्मफल से ही दुःख भोगते हैं। मेरे बन्धन की चिन्ता छोड़कर तुम इस समय अपने शरणागत अतिथि की सेवा करो। जो जीव अपने अतिथि का सत्कार नहीं करता उसके सब पुण्य छूटकर अतिथि के साथ चले जाते हैं और सब पाप वहीं रह जाते हैं।'

पत्नी की बात सुन कर कबूतर ने व्याध से कहा- 'चिन्ता न करो वधिक! इस घर को भी अपना ही जानो। कहो, मैं तुम्हारी कौन सी सेवा कर सकता हूँ?' व्याध- 'मुझे सदीं सता रही है, इसका उपाय कर दो।'

कबूतर ने लकड़ियाँ इकट्ठी करके जला दीं। और कहा- 'तुम आग सेक कर सदीं दूर कर लो।' कबूतर को अब अतिथि-सेवा के लिये भोजन की चिन्ता हुई। किन्तु, उसके घोंसले में तो अन्न का एक दाना भी नहीं था। बहुत सोचने के बाद उसने अपने शरीर से ही व्याध की भूख मिटाने का विचार किया। यह सोच कर वह



महात्मा कबूतर स्वयं जलती आग में कूद पड़ा। व्याध ने जब कबूतर का यह अद्भुत बलिदान देखा तो आश्चर्य में डूब गया। कबूतरी अपने पति को आग में जलता देखकर विलाप करने लगी। उसने सोचा- 'अपने पति के बिना अब मेरे जीवन का प्रयोजन ही क्या है? मेरा संसार उजड़ गया, अब किसके लिये प्राण धारण करूँ?' यह सोच कर वह पतिव्रत भी आग में कूद पड़ी।

यह देख व्याध की आत्मा उसे धिक्कारने लगी। उसी क्षण उसने जाल व अन्य उपकरणों को तोड़-फोड़ कर फेंक दिया। इन दोनों के बलिदान पर आकाश से पुष्पवर्षा हुई। व्याध ने भी उस दिन से प्राणी-हिंसा छोड़ दी।

बाल-प्रश्नोत्तरी

01. निम्नांकित में कौन वीररस के कवि हैं?

- (क) सुमित्रानंदन पन्त
- (ख) मैथिलीशरण गुप्त
- (ग) रामनरेश त्रिपाठी
- (घ) श्यामनारायण पाण्डेय

02. 23 जनवरी को किस महापुरुष का जन्मदिवस मनाया जाता है?

- (क) स्वामी विवेकानन्द
- (ख) नेताजी सुभाषचंद्र बोस
- (ग) गुरु गोविन्द सिंह
- (घ) भगत सिंह

03. नेताजी सुभाषचंद्र बोस ने किस फ़ौज की स्थापना की थी?

- (क) आजाद हिन्द फ़ौज
- (ख) रिपब्लिकन आर्मी
- (ग) शौर्य सेना
- (घ) रणवीर सेना

04. बसंत पंचमी पर किस देवी की उपासना की जाती है?

- (क) माँ लक्ष्मी
- (ख) माँ दुर्गा
- (ग) माँ काली
- (घ) माँ सरस्वती

05. संस्कार भारती के संस्थापक कौन हैं?

- (क) योगेन्द्र बाबा
- (ख) वचनेश त्रिपाठी
- (ग) दत्तोपन्त ठेंगड़ी
- (घ) नेताजी सुभाषचंद्र बोस

06. 'वन्दे मातरम' गीत के रचयिता हैं-

- (क) शरत चंद्र चट्टोपाध्याय
- (ख) रवीन्द्रनाथ टैगोर
- (ग) बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय
- (घ) सुब्रह्मण्यम भारती

07. 'मैं कौन हूँ' ग्रन्थ के लेखक कौन हैं ?

- (क) महर्षि अरविन्द
- (ख) महर्षि रमण
- (ग) महर्षि वेद व्यास
- (घ) दयानंद सरस्वती

आपकी खुशियों को जलाती ईर्ष्या

कि सी की उन्नति, वैभव को देखकर ईर्ष्या मत करो क्योंकि आपकी ईर्ष्या से दूसरों पर तो कोई फर्क नहीं पड़ेगा मगर आपका स्वभाव जरूर बिगड़ जायेगा। किसी दूसरे की समृद्धि या उसकी किसी अच्छी वस्तु को देखकर यह भाव आना कि यह इसके पास न होकर मेरे पास होनी चाहिये थी, बस इसी का नाम ईर्ष्या है।

ईर्ष्या सीने की वह जलन है, जो पानी से नहीं अपितु सावधानी से शान्त होती है। ईर्ष्या की आग बुझती अवश्य है- किन्तु बल से नहीं, विवेक से। ईर्ष्या वह आग है जो लकड़ियों को नहीं अपितु आपकी खुशियों को जलाती है।

अतः सन्तोष और ज्ञान

रूपी जल से इसे और अधिक भड़कने से रोके ताकि आपके जीवन में खुशियाँ नष्ट होने से बच सकें। जलो मत साथ- साथ चलो, क्योंकि खुशियाँ जलने से नहीं अपितु सद्मार्ग पर चलने से मिलती हैं।



व्रत-पर्व

- 16 कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी, मूल - प्रदोष व्रत, मासिक शिवरात्रि
17 कृष्ण पक्ष, चतुर्दशी, मूल
18 कृष्ण पक्ष, अमावस्या, पूर्वाषाढ़ा - मौनी अमावस्या
19 शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा, उत्तराषाढ़ा - गुप्त नवरात्र प्रारम्भ
20 शुक्ल पक्ष, द्वितीया, श्रवण
21 शुक्ल पक्ष, तृतीया, धनिष्ठा
22 शुक्ल पक्ष, चतुर्थी, शतभिषा - विनायक चतुर्थी
23 शुक्ल पक्ष, पंचमी, पूर्वाभाद्रपद - बसंत पंचमी
24 शुक्ल पक्ष, षष्ठी, उत्तराभाद्रपद
25 शुक्ल पक्ष, सप्तमी, रेवती - रथ सप्तमी
26 शुक्ल पक्ष, अष्टमी, अश्विनी - नर्मदा जयंती, भीष्म अष्टमी
27 शुक्ल पक्ष, नवमी, भरणी - महानन्दा नवमी
28 शुक्ल पक्ष, दशमी, कृत्तिका
29 शुक्ल पक्ष, एकादशी, रोहिणी - अजा एकादशी
30 शुक्ल पक्ष, द्वादशी, आर्द्रा
31 शुक्ल पक्ष, त्रयोदशी, पुनर्वसु - प्रदोष व्रत

महानन्दा
नवमी



पाक्षिक राशिफल



ज्योतिर्विद पं. दिवाकर त्रिपाठी

निदेशक- उत्थान ज्योतिष संस्थान



मेष राशि-

सरकारी लाभ में वृद्धि। पद, प्रतिष्ठा एवं सम्मान में वृद्धि। पिता के सुख, सानिध्य एवं वर्चस्व में वृद्धि। सन्तान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा। अध्ययन अध्यापन में रुचि बढ़ेगी।



वृषभ राशि-

पराक्रम एवं सम्मान में वृद्धि होगी। भाग्य का साथ कार्यों के साथ प्राप्त होगा। पिता के सहयोग एवं सुख में वृद्धि। सुख के संसाधनों में वृद्धि। राजनीति क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ।



मिथुन राशि-

खर्च बढ़ेगा। वाणी की तीव्रता में वृद्धि। पिता के स्वास्थ्य को लेकर चिन्ता बढ़ेगी। मन में सामान्य उलझन की स्थिति रहेगी। सामाजिक सम्बंधित कार्यों में देरी होगी।



कर्क राशि-

सरकारी क्षेत्र से जुड़े लोगों को लाभ होगा। दाम्पत्य एवं प्रेम सम्बन्धों में टकराव होगा। साझेदारी के कार्यों से धन वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों को लेकर व्यस्तता। रोजगार में प्रगति होगी।



सिंह राशि-

प्रतियोगिता एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त होगी। पुराने रोगों का समापन होगा। मनोबल में थोड़ी कमी दिखायी देगी। पिता के स्वास्थ्य के प्रति चिन्ता बढ़ेगी। यात्रा खर्च में भी वृद्धि का सहयोग बनेगा।



कन्या राशि-

अध्ययन अध्यापन में अवरोध बढ़ेगा। आय के साधनों में वृद्धि सम्भव। सन्तान पर खर्च की स्थिति बढ़ेगी। मन में विचलन तथा कार्यों को लेकर चिन्ता बढ़ेगी।



तुला राशि-

लाभ एवं आय के संसाधनों में वृद्धि होगी। कंस्ट्रक्शन, रियल एस्टेट, वाहन एवं ट्रांसपोर्ट से जुड़े लोगों को लाभ। सीने की तकलीफ एवं घबराहट में वृद्धि हो सकती है।



वृश्चिक राशि-

सामाजिक प्रतिष्ठा एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। राजनीतिक वर्चस्व में सकारात्मक

स्मरणीय तिथियाँ

गुरु हरराय
गोविन्द रानाडे, शरत चंद्र चट्टोपाध्याय, रामनरेश त्रिपाठी
रांगेय राघव, (पुण्यतिथि) बिरजू महाराज
महादेव गोविन्द रानाडे, बाल आप्टे
जी. सुब्रह्मण्यम अय्यर
रतनजी टाटा, (पुण्यतिथि) बलिदानी गेंद सिंह
शिवपूजन सहाय, रास बिहारी बोस
ठाकुर रोशन सिंह, क्रान्तिकारी अजीजन बाई
सुभाष चंद्र बोस जयंती
पद्मश्री वचनेश त्रिपाठी, कर्पूरी ठाकुर
होमी जहाँगीर भाभा, भीमसेन जोशी, चन्द्रबली पाण्डेय
रानी गाइदिनल्यू
कवि श्याम नारायण पाण्डेय
पण्डित सीताराम चतुर्वेदी
लाला लाजपत राय, विद्यानिवास मिश्र,
पंडित जसराज, जनरल के.एम. करियप्पा
प्रो. राजेन्द्र सिंह 'रज्जू भैया'
जयशंकर प्रसाद,
महात्मा गाँधी, माखन लाल चतुर्वेदी
मेजर सोमनाथ शर्मा

प्रगति एवं भाग्य का साथ प्राप्त होगा। कार्यक्षमता में वृद्धि से मन प्रसन्न रहेगा। शुभ अवसर प्राप्त होगा।



धनु राशि-

आय एवं धन में वृद्धि होगी। पारिवारिक कार्यों को लेकर के मन में प्रसन्नता होगी। आँख, पेट और पैर की समस्या के प्रति सतर्क रहें। व्यापारिक विस्तार होगा।



मकर राशि-

स्वास्थ्य के कारण मानसिक चिन्ता में वृद्धि। उच्च अधिकारियों से विवाद या तनाव सम्भव। दाम्पत्य जीवन एवं प्रेम सम्बंधों में टकराव होगा। पारिवारिक उलझनों में वृद्धि सम्भव। साझेदारी के कार्यों के प्रति सावधान रहें।



कुम्भ राशि-

नियमित आय में अवरोध या तनाव बढ़ेगा। दाम्पत्य जीवन एवं प्रेम संबंधों में तनाव बढ़ेगा। आँखों की समस्या के प्रति सावधान रहे। प्रतियोगिता में विजय की स्थिति बनेगी। जीवन साथी के स्वास्थ्य पर खर्च बढ़ेगा।



मीन राशि-

लाभ एवं आय के संसाधनों में वृद्धि होगी। शत्रुओं पर विजय की स्थिति बनेगी। अध्ययन में अवरोध एवं संतान के पक्ष से तनाव की स्थिति बनेगी। पराक्रम एवं सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।



भारत की पहली रैपिड रेल सेवा मेरठ से दिल्ली तक 'नमो भारत' का संचालन



काम दमदार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश



UPGovtOfficial



CMUttarpradesh



CMOfficeUP

